आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/UD/29-150/2017-2019

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 3 | अंक 04 | उदयपुर गुरूवार 01 मार्च 2018 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

होली के दो अनोखे देव : इलोजी और लांगुरिया

छेड़ादेव लांगुरिया और अनूठे देव इलोजी

- डॉ. महेन्द्र भानावत -

इलोजी बांझ औरतों को संतान देने वाले देव हैं। लांगुरिया के बड़े चर्चे हैं जो लोकगीतों के सम्बध में प्रचलित हैं। उनमें यह परपुरुष के रूप में भी याद किया जाता है। लांगुरिया के मूल में प्रचलित लंगर शब्द का अर्थ परायी स्त्री से अनुचित सम्बंध रखने वाला रसिक पुरुष है।

इलोजी का भरा हुआ चेहरा, हष्टपुष्ट शरीर, बांकी तनी मूछें, कानों में कुण्डल, गले में हार, भुजाओं पर बाजूबंद, कलाइयों में कंगन तथा भांति-भांति के रंगों की विविध कोराई में जो वैशिष्ट्य और शाही रूप परिलक्षित होता है, उससे राह चलता कोई भी आकर्षित हुए बिना नहीं रहता।

छेड़ादेव अर्थात् छेड़खानी करने वाला देव। होली के दिनों में, खासतौर से राजस्थान में, इलोजी और लांगुरिया, ये दोनों देव बड़े विचित्र रूप से याद किये जाते हैं। इलोजी तो बांझ औरतों को संतान देने वाले देव हैं। लांगुरिया इलोजी से भिन्न है, जिसकी खासकर राजस्थान के करौली क्षेत्र में बड़ी मान्यता है। ब्रज क्षेत्र में भी इसके बड़े चर्चे हैं जो लोकगीतों

के सम्बध में प्रचलित हैं। उनमें यह परपुरुष के रूप में भी याद किया जाता है। लांगुरिया के मूल में प्रचलित लंगर शब्द का अर्थ परायी स्त्री से अनुचित सम्बंध रखने वाला रसिक पुरुष है।

अपने सम्बंध में स्वयं लांगुरिया जवाब देता है- 'बम्मन के हम बालका, उपजे तुलसी पेड़', यह ऐसा योद्धा है कि छह माह लम्बी रात्रि हो जाये तो भी तनिक सोयेगा नहीं। यह देवी का परम भक्त है। देवी आज्ञा दे तो असुर को नौ कीलें ठोक दें। पर, भक्तजन यह अच्छी तरह जानते हैं कि इसे राजी रखने से ही देवी प्रसन्न होगी। यह यदि बिगड़ गया तो, देवी का वरदान मिलने का नहीं। इसलिए यहां-वहां लांगुरिया गीतों की ही झड़ी लगी मिलती है। एक अवधारणा यह भी है कि एक पैर से लंगड़ा होने के कारण काला भैरव ही देवी चामुंडा के अखाड़े का वीर लांगुर-लांगुरिया कहलाया।

चैत्र कृष्ण एकादशी से चैत्र शुक्ल दशमी तक करौली के केलादेवी मेले में लांगुरिया गीतों-मनौतियों की बहार देखने को मिलती है। तब राजस्थान ही नहीं, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, गुजरात, पंजाब, हरियाणा तक के लोग इस मेले में उमड़ पड़ते हैं। मैंने देखा, औरतें अपने हाथों में हरी-हरी चूड़ियां पहने, माथे पर कलश धरे, हथेलियों में मेहंदी रचाये, कोरे पीले पहनावे में देवी के साथ-साथ लांगुरिये की पूजा में भी उतनी ही मगन बनी हुई हैं। पीले-पीले परिधान में, अपने खुले बालों के साथ नाचती-ठुमकती रात-रात भर गीतों की गम्मतें ले रही हैं। मेले का हर पुरुष लांगुरिया और हर औरत जोगण बनी हुई है। औरतें गा रही हैं-

दे दे लम्बो चौक लांगुरिया बरस दिनां में आयिंगे
अब के तो हम छोरा लाये परके बहुअल लायिंगे
अब के तो हम बहअल लाये परके नाती लायिंगे

- शेष पृष्ठ सात पर

राजस्थान के कई गांवों, कस्बों और शहरों में इलोजी की ईंट-पत्थर से बनी प्लस्तर की हुई विशाल प्रतिमा देखने को मिल जायेगी। राजशी वेश-व्यक्तित्व के धनी ये अद्‌भुत देवता अपने विशाल एवं भव्य शाही ठाठ में खड़े-पंजे ऊंचे आसन पर बैठ हुए मिलेंगे।

इलोजी का भरा हुआ चेहरा, हष्टपुष्ट शरीर, बांकी तनी मूछें, कानों में कुण्डल, गले में हार, भुजाओं पर बाजूबंद, कलाइयों में कंगन तथा भांति-भांति के रंगों की विविध कोराई में जो वैशिष्ट्य और शाही रूप परिलक्षित होता है, उससे राह चलता कोई भी आकर्षित हुए बिना नहीं रहता। जहां इनका कमर के ऊपर का सारा तन इतना सजाधजा और वस्त्राभूषणों से युक्त रंगावलियों में प्रदर्शित किया होता है वहां नीचे का भाग खुली नग्नता को दर्शाकर एक अजीब माहौल खड़ा कर देता है।

होली का यह देवता कहीं-कहीं सचमुच के वस्त्राभूषणों से सजाया जाता है। अच्छे वेश कीमती वस्त्र पहनाये जाते हैं। पाग में तुर्रे, कलंगी, मोड़ लगाये जाते हैं। सोने के कीमती आभूषण तथा असली मोतियों के हार तक पहनाये जाते हैं। हाथ में नारियल रख दिया जाता है। कथा किंवदंतियों में ये इलोजी तो स्वयं कुंवारे हैं पर निपूती औरतों को पुत्र प्रदान करने वाले देव हैं इसीलिए इनके लिंग के स्थान पर बने विशाल छेद में ठूंसे मोटे बड़े डंडे को लिंग के रूप में बांझ औरतें अपनी योनि से छुवा कर पुत्र प्राप्ति का वरदान पाती हैं। राजस्थान में ऐसी कई औरतें मिलेंगी जिनके इलोजी की कृपा से संतानें हुई हैं।

पुराणों में इलोजी के एक आख्यान के अनुसार सम्राट हिरण्यकश्यप बड़े प्रतापी और प्रभावी सम्राट थे जिनके होली नाम की इकलौती बहिन थी। हिरण्यकश्यप के प्रहलाद नामक पुत्र था जो बचपन से बड़ा धार्मिक और भक्तिवान था। हिरण्यकश्यप को उसका ऐसा होना अच्छा नहीं लगा अत: उसने होली को कहा कि वह किसी तरह प्रहलाद का खात्मा कर दे।

- शेष पृष्ठ सात पर

हास्य देव इलोजी

- प्रभाशंकर उपाध्याय 'प्रभा' -

'इलोजी! थारी जान कदै आवेली?' (इलोजी! तेरी बरात कब आयेगी?) एक व्यक्ति से, कुछ पुरुष यह प्रश्न बार-बार कर रहे थे। जवाब में, पहले वह तनिक मुस्कराया, फिर शर्माया और अंत में प्रश्नों की बौछार से चिढ़ उठा। उसकी कुढ़न पर प्रश्नकर्ता ठठा कर हंस पड़े। इलोजी कौन था और क्यों चिढ़ा? दरअसल उस व्यक्ति का नाम इलोजी नहीं था। वह तो एक ओपमा मात्र थी-होली के हास्य देव की प्रतीक।

राजस्थान के पश्चिमी भाग, मारवाड़ के तकरीबन सभी ग्रामों, कस्बों या शहरों में एक भव्य पुरुष की विशालकाय प्रतिमा दिख जाया करती है। कहीं पर मूर्तियों की मुद्रा खड़े रूप में है तो कहीं बैठे हुए। यही इलोजी हैं। होली के अनुपम लोकदेवता। कुछ लोगों का मानना है कि नगरपाल (क्षेत्रपाल) अथवा भैरां बाबा (भैरव) ही इलोजी हैं। हो सकता है, जिसे पूर्व राजस्थान में भैरों के नाम से सम्बोधित किया जाता रहा है, पश्चिम में उसी का रूप बदलकर इलोजी हो गया हो।

सम्पूर्ण राजस्थान में भैरों अथवा क्षेत्रपाल बाबा के थान (समाधियां) मिलते हैं। एक समानता यह भी है कि विवाह के तुरन्त पश्चात मंगलकामना हेतु नव-विवाहितों को भैरव या इलोजी के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता रहा है।

मारवाड़ में इलोजी एक अलग ही पहचान रखते हैं। वे द्योतक हैं, हास-परिहास के। यदि कोई युवक लम्बे समय तक कुंवारा रह जाता है तब उसे इलोजी कह कर चिढ़ाने का आनंद लूटा जाता है। होली के अवसर पर ऐसे इलोजी की शामत ही आ जाती है। बेचारा कब तक, कितने लोगों का मजाक सहन करे।

इलोजी की कथा भी विचित्र है। वे हिरण्यकश्यप के भावी बहनोई थे। विवाह के दिन इलोजी धूमधाम से बरात लेकर होलिका को ब्याहने आ रहे थे। मार्ग में उन्हें समाचार मिला कि उनकी भावी पत्नी ने आत्मदाह कर लिया है। होलिका चली थी प्रहलाद को भस्म करने, स्वयं राख हो गई।

संदेश पाते ही बरात हतप्रभ रह गई। गाजे-बाजे शांत हो गये। इलोजी पर विक्षिप्तता का भूत सवार हो गया। उसी उन्माद में वे घोड़ी से उतर 'होलिका..... होलिका' पुकारते हुए दाहस्थल तक दौड़ लगा गये किन्तु वहां क्या था, सिर्फ गरम-गरम राख। उसी विक्षिप्तावस्था में इलोजी ने चिता की राख अपने शरीर पर मलनी प्रारंभ कर दी।

- शेष पृष्ठ सात पर

इलोजी होलिका के प्रेमी

- योगेशचन्द्र शर्मा -

होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि उस पर अग्नि का असर नहीं होगा। मान्यता है कि वह नित्य प्रतिदिन कुछ समय अग्नि पर बैठती और उसका पान भी करती थी। होलिका की मृत्यु के बाद इलोजी आजन्म कुंवारे रहे।

पागलों की तरह यहां-वहां भटकते, उपहास का पात्र बनते रहे। इसके बावजूद, समाज में उन्हें आदर्श प्रेमी का दर्जा मिला। राजस्थान में इलोजी को कहीं फागुन देवता कहा गया है, तो कहीं नगर रक्षक भैरूजी। हिमाचल प्रदेश में चैत्र में मनाए जाने वाले चैमोल पर्व में इलोजी के स्वांग भरे जाते हैं।

होलिका के बारे में जनसाधारण को सामान्यत: यही जानकारी है कि वह दैत्यराज हिरण्यकश्यप की बहन थी और भक्त प्रहलाद की बुआ। यह कम ही लोगों को पता है कि होलिका अत्यंत सुंदर युवती थी और उसका एक प्रेमी भी था-इलोजी। इलोजी पड़ोस के किसी राजपरिवार से संबंधित थे और होलिका से उनका अगाध प्रेम था। जिस दिन होलिका अग्नि में जल मरी थी, उसी दिन उसका विवाह इलोजी से संपन्न होना था।

होलिका को यह वरदान प्राप्त था कि उस पर अग्नि का असर नहीं होगा। मान्यता है कि वह नित्य प्रतिदिन कुछ समय अग्नि पर बैठती और उसका पान भी करती थी। उधर हिरण्यकश्यप अपने विष्णु-भक्त पुत्र प्रहलाद से बहुत दुखी था। उसने उसे मारने के कई प्रयत्न किए थे। प्रहलाद जनता में लोकप्रिय था, इसलिए हिरण्यकश्यप को डर था कि अगर उसने स्वयं प्रहलाद की हत्या की, तो जनता नाराज हो जाएगी। उसने होलिका के माध्यम से प्रहलाद को समाप्त करने की योजना बनाई, जिसके अनुसार होलिका खेल-खेल में प्रहलाद को गोद में लेकर जलती चिता में प्रवेश कर जाए और प्रहलाद को अग्नि की भेंट कर दे। हिरण्यकश्यप ने अपनी योजना होलिका के सामने रखी। होलिका ने विरोध किया, लेकिन जब उसके सामने शर्त रखी गई कि अगर उसने ऐसा नहीं किया, तो इलोजी से उसका विवाह नहीं किया जाएगा। इस पर उसे झुकना पड़ा। वह प्रहलाद को लेकर अग्नि में चली गई, लेकिन स्वयं जल मरी। प्रहलाद बच गया।

इलोजी इस घटनाक्रम से सर्वथा अपरिचित थे। इसलिए वह अपनी गाती-बजाती बारात के साथ घोड़े पर चढ़कर राजमहल की ओर बढ़ रहे थे। अचानक उन्हें होलिका के जल मरने की सूचना मिली। रंग में भंग हो गया। इलोजी सन्न रह गए। जब उनकी चेतना लौटी, तो वह घोड़े से कूदे और दूल्हे वाली वेशभूषा को नोंच-नोंचकर फाड़ डाला। इसके बाद वह पागलों की तरह उस तरफ दौड़े, जहां होलिका जली थी। उन्होंने होलिका की भस्म को अपने शरीर पर मल लिया और बाकी यहां-वहां खड़े लोगों पर फेंकने लगे। लोग हिरण्यकश्यप से पीड़ित थे, सो होलिका के लिए भी उनके मन में कोई सहानुभूति नहीं थी।

- शेष पृष्ठ सात पर

स्मृतियों के शिखर (47) : डॉ. महेन्द्र भानावत

पूर्व जन्मानुभूतियों के प्रवर प्रयोक्ता मुनिश्री किशनलालजी

बीकानेर संभाग के मोमासर में 02 नवम्बर 1930 को जन्मे मुनिश्री किशनलालजी ओसवाल गोत्र के अपने सात भाइयों में सबसे छोटे हैं जिन्होंने 16 वर्ष की उम्र में आचार्य तुलसी से दीक्षा ग्रहण की। इससे पूर्व उनके बड़े पिता मुनिश्री पांचीरामजी, बड़ी माता साध्वी मनसुखांजी, बड़ी-मां साध्वी मालूजी तथा मौसी की बेटी बहन साध्वी मूलांजी दीक्षित हो चुके थे।

ध्यान साधना में विशेष रुचि रहते मुनिश्री ने न केवल योग, ध्यान तथा साधना विषयक ग्रंथों का बड़े मनोयाग से गूढ़ अध्ययन किया अपितु ऐसे व्यक्तियों से सम्पर्क कर उनके अनुभवों का लाभ लिया और प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान के शिक्षण-प्रशिक्षण तथा प्रयोग में अपने को समर्पित कर दिया।

मुनिश्री ने बताया कि आचार्यश्री तुलसी ने उनकी इस अभिरुचि को देखते हुए उन सारी सुविधाओं तथा सुअवसरों को सुलभ किया तथा 'प्रेक्षा प्राध्यापक' का सम्बोधन-सम्मान भी प्रदान किया।

अपने पूर्वजन्म को जानना और उसके अनुभवों से रू-ब-रू होना सचमुच में विस्मयकारी घटना है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ के विद्वान शिष्य मुनिश्री किशनलालजी इस विद्या के विशेषज्ञ विद्वान प्रयोक्ता हैं। उन्होंने ऐसे अनेक शिविर लगाकर साधकों को नौ-नौ पूर्वजन्मों तक की अनुभूति कराई है।

उदयपुर में जब आचार्यश्री महाप्रज्ञ का चातुर्मास हुआ तब महाप्रज्ञ विहार में उनसे भेंट करने के सुअवसर ही नहीं मिले, ऐसे एक शिविर में मैंने भी भाग लेकर कई साधकों के अनुभवों से ऊर्जस्वी हुआ। यहीं उनकी लिखित पुस्तक 'रहस्य पूर्वजन्मों के' में मेरा भी सहयोग बना।

आत्म साक्षात्कार की आध्यात्मिक अवधारणा के सम्बन्ध में मुनिश्री ने बताया कि आत्मा का अस्तित्व है। यह अस्तित्व पूर्व में भी रहा और आगे भी रहेगा। इस त्रिकालवर्ती अस्तित्व की स्वीकृति एवं अनुभूति ही आत्म साक्षात्कार की आध्यात्मिक अवधारणा है।

यों अध्यात्म का अर्थ ही आत्मा का सामीप्य पाना तथा उसमें रमण करना है। तीर्थंकर महावीर को केवल ज्ञान हुआ। तब उन्होंने घोषणा की कि आत्मा शाश्वत है। वह ज्ञान-दर्शन से युक्त है। शेष बहिर्भाव संयोग लक्षण वाले हैं। इस दृष्टि से आत्मा की स्वीकृति ही अध्यात्म की अवधारणा है।

पूर्वजन्म की अनुभूति के लिए साधक में लक्ष्य के प्रति तीव्र अभिप्सा, ध्यान द्वारा पूर्व एकाग्रता, कायोत्सर्ग अभ्यास से शरीर का शिथिलीकरण, ममत्व का, परि-विधि का निष्ठापूर्वक पारायण और गुरु का अनुग्रह जैसे गुण आवश्यक बताये। इस दिशा में उनके दीक्षा-गुरु आचार्यश्री तुलसी एवं अध्यात्मयात्रा के पथदर्शक आचार्यश्री महाप्रज्ञ का आशिष उनके लिए वरदान सिद्ध हुआ है।

इसके अलावा भेद विज्ञान द्वारा कायोत्सर्ग के विशेष प्रयोग, संकल्प

की गहराई, अनुप्रेक्षा द्वारा अभय का पूर्व अभ्यास, प्राण-प्रयोग द्वारा ब्रम्हांड में फैलाव एवं अतीत की यात्रा में प्रवेश, तदनन्तर आत्म साक्षात्कार से पूर्वजन्मों के अनुभवों का दिग्दर्शन कराया जाता है।

पूर्वजन्म की अनुभूति के पश्चात् साधक की शारीरिक स्थिति प्राय: सामान्य रहती है। उसे हल्कापन महसूस होता है। तनाव से मुक्ति का अनुभव होने लगता है। अतीत में हुई इस यात्रा के सुखद आश्चर्य से उसका मन प्रफुल्ल रहता है। भावों के परिष्कार से आसक्ति, भय, वैर आदि से मुक्त मन और चित्त की अवस्थिति पवित्रता की ओर उन्मुख हुई लगती है।

पूर्वजन्म की स्मृतियों को जागृत करने के लिए प्रेक्षाध्यान, समता-योग, कायोत्सर्ग एवं वीतरागता का अप्रमत्त भाव से प्रयोग अवश्यंभावी है। तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यश्री महाप्रज्ञ के विद्वान शिष्य मुनिश्री किशनलालजी इस विद्या के विशेषज्ञ विद्वान प्रयोक्ता हैं। उन्होंने ऐसे अनेक शिविर लगाकर साधकों को नौ-नौ पूर्वजन्मों तक की अनुभूति कराई है। अपने पूर्वजन्म को जानना और उसके अनुभवों से रू-ब-रू होना सचमुच में विस्मयकारी घटना है। भेद विज्ञान द्वारा कायोत्सर्ग के विशेष प्रयोग, संकल्प की गहराई, अनुप्रेक्षा द्वारा अभय का पूर्व अभ्यास, प्राण-प्रयोग द्वारा ब्रम्हांड में फैलाव एवं अतीत की यात्रा में प्रवेश, तदनन्तर आत्म साक्षात्कार से पूर्वजन्मों के अनुभवों का दिग्दर्शन कराया जाता है।

जाति-स्मृति की अवधारणा भगवान महावीर की विशिष्ट देन कही जाती है। इसमें व्यक्ति अपने कृत-कर्मों को साक्षात् कर जीवन की दिशा को रूपान्तरित कर लेता है। पिछले जन्म में किये हुए पापों का प्रायश्चित कर अपने दोषों का परिहार कर लेता है। इसके अलावा पूर्वजन्म की बीमारियों तथा मानसिक समस्याओं का निराकरण भी हो जाता है।

जाति-स्मृति प्रकट होने के आधार की चर्चा में मुनिश्री ने बताया कि कभी-कभी बचपन में सहज रूप से, अपनी मति से भी जाति-स्मृति प्रकट हो जाती है। पर-व्याकरण में आप्त पुरुष अथवा तीर्थंकर आदि के नियमन या फिर दूसरों से सुनकर भी जाति-स्मृति प्रकट होने के उदाहरण मिलते हैं। प्रेक्षाध्यान, कायोत्सर्ग आदि के विशेष प्रयोग प्रयोगकर्ता के तीव्र संकल्प एवं गुरु के अनुग्रह से भी जाति-स्मृति का प्राकट्य हुआ देखा गया।

पूर्वजन्म अनुभूति शिविरों द्वारा साधकों का शरीरिक, मानसिक, बैद्धिक, भावात्मक तथा आध्यात्मिक पक्ष सबल, संतुलित तथा सहिष्णु बन निखरा है। मुनिश्री तो ध्यान एवं कायोत्सर्ग द्वारा उस परिस्थिति का निर्माण करते हैं जिससे साधक पूर्वजन्म की स्थिति में चला जाता है। मुनिश्री ने बड़े सार्थक रूप में लाडनूं, जयपुर, दिल्ली, उदयपुर आदि स्थानों पर ऐसे शिविर आयोजित किये हैं। इसके अतिरिक्त जब कभी मूड हो जाता है और सामने वाले की पात्रता अनुकूल होती है तो सहज ही यह कार्य सम्पादित हो जाता है। ऐसे शताधिक साधकों को मुनिश्री यह प्रयोग करा चुके हैं।

शिविरार्थियों को जो अनुभव और अनुभूति हुई उसके फलस्वरूप मुनिश्री की 'यात्रा पूर्वजन्म की' तथा 'रहस्य पूर्वजन्मों के' नामक दो पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। इनमें देश-विदेश के साधकों को जो अनुभव एवं अनुभूतियां हुईं उनकी बड़ी ही रोचक तथा रोमांचक जानकारी संजोई गई है।

पूर्वजन्म की अनुभूतियों से वर्तमान जीवन का परिष्कार करते हुए व्यक्ति श्रेष्ठत्व को प्राप्त कर सकता है। मुनिश्री ने बताया कि वर्तमान में व्यक्ति अपनी मूर्च्छा एवं आसक्ति से उन्हीं कार्यों को बार-बार दोहरा रहा है जिनका परिणाम उसे प्राप्त नहीं हो रहा है। यदि कोई व्यक्ति दीवाल पर पेन्टिंग किये हुए दरवाजे में प्रवेश करने की कोशिश करेगा तो वह अपना ही नुकसान करेगा। उस पार नहीं जा सकेगा। ऐसे ही व्यक्ति अपने परिजन, धन, सम्पत्ति आदि में आसक्त हुआ जन्म-जन्मान्तर से मूर्च्छित होता आ रहा है।

ऐसे में पूर्वजन्म की घटनाओं को देखकर वह अपनी मूर्च्छा तथा आसक्ति को त्यागने की चेष्टा कर सार्थक जीवन जीने का उपक्रम करता है। इससे उसके क्रोध में कमी आयेगी। लोभ, हिंसा, स्वार्थ, ममत्व आदि से परे हो त्याग एवं संयम की ओर उन्मुख होगा।

जब जीवन शुद्ध होगा तो स्वयमेव ही श्रेष्ठत्व का वरण होगा। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पूर्वजन्म की स्मृतियों को जागृत करने के लिए ध्यान, समता-योग, कायोत्सर्ग एवं वीतरागता का अप्रमत्त भाव से प्रयोग अवश्यंभावी है।

जहां पांडवों ने खेली होली

-डा. तुक्तक भानावत-

होली का गड़बोर का चारभुजा का मेला बहुत दूर-दूर तक प्रसिद्ध है। 'गड़बोर बिराजे चारभुजा' पंक्ति एक टकसाल बन गई है जो

'गड़बोर' और 'चारभुजा' दोनों की पर्याय पूरक कही जाती है। गड़बोर उदयपुर जिले का वह धार्मिक स्थल है जो कुंभलगढ़ से 32, आमेट से 30 और उदयपुर से 112 किलोमीटर है। यहां जो चारभुजा की मूर्ति है वह पाण्डवों द्वारा पूजी जाती थी और यहां पाण्डवों द्वारा खेली गई होली की स्मृति आज भी कंठ-दर-कंठ लोगों की जबान पर चढ़ी हुई है। जब तपस्या के लिए पाण्डव जाने लगे तो मूर्ति को पानी में छिपा गये ताकि उसकी कोई अवमानना कर अंगभंग न कर सके।

इस घटना के कई वर्षों बाद राजपूत बोराना के प्रमुख गंगदेव, जयकालदेव और कालदेव ने मिलकर गड़बोर की नींव डाली। गड़ तो गढ़ होने का प्रमाण रहा और बोराना का बोर इसके साथ जुड़कर गड़बोर नाम हो गया जो आज तक चला आ रहा है। गंगदेव को सपना मिला चारभुजाजी का, तब पानी में से वह मूर्ति निकाली गई और मंदिर में स्थापना की गई। बाद में मारवाड़ के राजाओं के आक्रमण हुए जिनमें बोराना के कई वीर काम आए।

यह भी कहा जाता है कि मुसलमानों के अत्याचारों से बचाव हेतु बोराना राजपूतों ने भी इस मूर्ति को जल प्रवेश करा दिया तब नाथ गुसाइयों द्वारा यह निकाली जाकर पूजा के लिए प्रतिष्ठित की गई। वर्तमान गूजर पुजारियों के अनुसार भी यह मूर्ति बहुत पुरानी है। एक कथन यह भी है कि श्रीकृष्ण ने गोलोक जाते समय अपने सुदामा आदि दोस्तों को यह मूर्ति पूजा हेतु प्रदान की। कहा जाता है कि गड़बोर एक ऐसा स्थल है जहां छोटे-मोटे सवा सौ युद्ध हुए। अत: स्वाभाविक है, मूर्ति को दुश्मनों से बचाने हेतु बार-बार कई प्रयास करने पड़े होंगे। ऐसी स्थिति में पानी में विसर्जित करने की घटनाएं कई जगह घटी हैं।

मेवाड़ राजवंश द्वारा इस मंदिर की बड़ी देखभाल की गई। महाराणा संग्रामसिंह, अरिसिंह, जवानसिंह, स्वरूपसिंह ने तो न केवल सुव्यवस्था ही की, जागीरें तक भेंट की। यहां वर्ष में दो बार होली तथा देवझूलनी एकादशी पर मेला भरता है। पूरे पखवाड़े तक भरने वाला यह मेला दूर-दूर तक प्रसिद्ध है। होली पर गैरों का आयोजन यहां बड़ा प्रसिद्ध है। हाथों में छड़ियां लिये रात-रात भर गैरिये गैरमग्न हो फागुनी मस्ती में मदछके रहते हैं। चारभुजाजी की मूर्ति बड़ी चमत्कारी और आकर्षक है। भोग में सुबह मक्खन भोग, राजभोग में मीठे भात, दोपहर को कसार, शाम को दूध और रात्रि को गोला मिश्री अरोगाई जाती है। मंदिर के पास गोमती नदी है जो गंगा सी पवित्र मानी जाती है। मेलों में बालकों के झडूल्ये उतारे जाते हैं। अपनी-अपनी समस्याओं के लिए वे चारभुजाजी की बोलमा बोलते हैं।

होली पर हंसी के हुलचट्टे

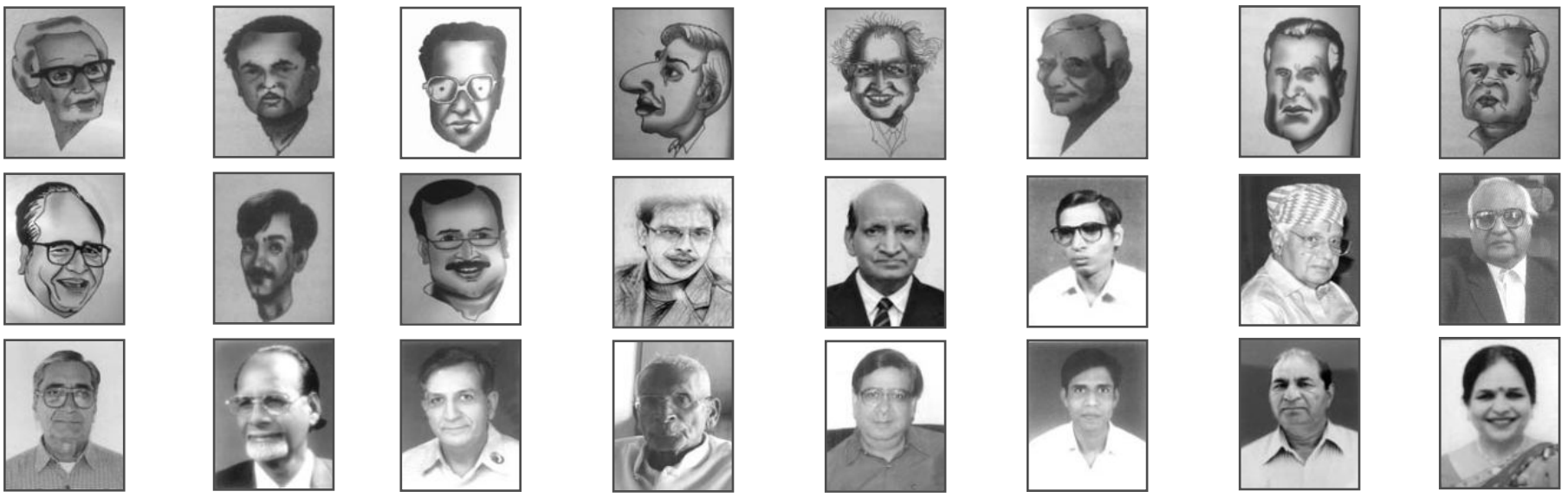

(1) नंद चतुर्वेदी :

दंदफंद सारी विधा, साहित्य के गुलकंद।
याद आ रहे हो बहुत, आनंदघन श्रीनंद।।

(2) डॉ. भगवतीलाल व्यास :

एक इनाम मिला, दूसरे का गुन्ताड़ा।
मित्रों से क्या? इसीलिए तो पल्ला झाड़ा।।
पल्ला झाड़ा तभी इकट्ठा किया खजाना।
अब तक क्या मिल गया रखा था आनाजाना।।
कह लापर कवि कान खोलकर सुनलो बाबू।
हम ही होंगे मित्र, रहो कितने बेकाबू।।

(3) डॉ. रामगोपाल शर्मा 'दिनेश' :

सबके ही गोपाल हैं, सबकी हैं चौपाल।
सबकी सुध लेते रहें, सबके बन श्रीपाल।।

(4) डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर :

रात-रात भर रोयल-टी खुद ही पीते
कागज ऊपर मलम लगाते।
क्या बुनते, क्या धुनते, किसका भूत भगाते।।
सुबह देखते वासुन्दी के दोने खाली।
उपन्यास के बिखरे पन्नों पर चींटों की लाली।।
ऐसे कैसे जीते, दिन बीते।
रोयट-टी खुद ही पीते।।

(5) डॉ. महेन्द्र भानावत :

रस्सी जली न बंट पड्यो, खदबद करता खीच।
अकल दाढ़ कुलबो करे, सबद अदब के बीच।।

(6) कमर मेवाड़ी :

बहुत करी हाताहुती, उतर गया सब भूत।
यारों की यारी गई, बचे रहे यमदूत।।

(7) किशन दाधीच :

फंसा हुआ है गीत गले में, छूटे नांही अकड़ में।
कहां-कहां डुलते रहते हैं, किसकी जकड़-पकड़ में।।

(8) डॉ. लक्ष्मीनारायण नंदवाना :

सेमीनार संगोष्ठियां समारोह सब भूल।
चिलम फूंकते रह गये जंग खा गये टूल।।
सखे! यह कैसे क्या हो गया?
पीठ से पेट चिपक क्यों गया?

(9) कैलाश 'मानव' :

देवर्षि कैलाश पर कमलाजी के लार।
भजन भाव में लीन हैं, शांत प्रशांत बयार।।
शांत प्रशांत बयार वंदना के तट लहरी।
तन्दूरों, धन्तूरों, मजीरों सुखदा फहरी।।
छलक रहे हैं दिव्यांगों के दिव्य दूत भी।
सबकी होली रंगोली उंगली पांचों घी।।

(10) डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' :

सोचा था कुछ और रूंख अंकुर बन गया।
अनायास ही टूटा डाला, ठूंठ तन गया।।
अप ही अप, डाउन ही डाउन।
ठगा थका सा जीवन, बोझिल मन।।

(11) डॉ. तुक्तक भानावत :

घणी घास, हरियो घणो, लड़ालूम सब आम।
चौराहों पर भीड़ में, हबल्या-कबल्या जाम।।

(12) राजकुमार जैन 'राजन'

बीमा और साहित्य का, खूब किया गठजोड़।
तुम राजन बेजोड़ हो, तुमरी कोई न तोड़।।

(13) डॉ. देव कोठारी :

देवतुल्य अरिहंत सदा ही चित्त सुहाना।
अपनी ही अंटी से अपना खेल बनाना।।
घनानंद रसखान अभी भी देते हैं रस।
नये छंद की कविता नहीं दिलाती है जस।।
नहीं ताकते, ताकझांक करते नहीं लेखे।
फुल्के से फुलते फूलों से तुलते देखे।।

(14) डॉ. कुन्दन माली :

कुन्दन की मति देखिये, तत्वबोध के साथ।
मधु से तो लिपटा सही, मधुबन खोया हाथ।।

(15) डॉ. नरेन्द्र व्यास :

आदिम गंध सुहावनी, पढ़त-लिखत की चाह।
शीतकाल सुख दे नहीं, यह दुख देखत नाह।।

(16) डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी :

अब कम ही हैं रह गये, उत्तम पुरुष मलाल।
याद आ रही हे सखे, वह रोटी वह दाल।।

(17) वेद व्यास :

राई के रातों गये, भावताव सब जोश।
मुश्किल में अब होश है, किसको देवें दोष।।

(18) डॉ. इकबाल सागर :

अब पतंग गुलछें खाती हैं, भौंहें तनती नाँह।
वो दिन सौं दिन अब कहाँ, हिलती ढुलती छाँह।।

(19) शैलेष व्यास :

जय बोलो चन्द्रेशजी, जय-जय राजस्थान।
धन्य-धन्य शैलेषजी, होली पर बहुमान।।

(20) माधव दरक :

एड़ो केड़ो राजसथांन!
एकलंगी धोती में कविजी, कुंभलगढ़ सूं बोले।
बिन तोला ताकड़ी हाथ में, कुण जाणे कई तोले।।
देश-देश देशावर जावे, पूछे वा तरवार कठे?
राणाजी भालो चुभोयो, चेटक दीधी मार जठै।।
वी बांका वी जोध कठे, अर वी मूछ्यां वी ताव कठे?
वा घाटी वी घाट कठे अर सांगाजी रा घाव कठे?
कठेई जातो र्‌यो वो पाण
ऐड़ो केड़ो राजसथांन!

(21) इन्द्रप्रकाश श्रीमाली :

वाणी अब भी बुलंद है, खिसक गयो आकाश।
फिर भी डफली दे रही, पुनवाई की घास।।

(22) डॉ. दिलीप धींग

हाथी पर चढ़ गया मकोड़ा, दिखता कैसे।
गोबर में गणेशजी ने, घर घाला जैसे।

(23) श्रीकृष्ण शर्मा :

अभिनंदन करते रहे, सबके ठीकरीलाल।
जोश टनाटन था कभी, अब लौं ठनठनपाल।।

(24) शकुंतला पंवार :

वह बड़ तो बेकार हो गया, किंतु जड़ेली फूटी।
शाकुंतलम में आकर देखो, कहां गोपियां लूटी।।

(25) होली का फरमान :

रजनी कब ज्योत्स्ना हुई, इन्द्राणी के घाट।
बिखर गई सारी प्रभा, प्रीत हुई दो पाट।।
सजनिया गुलाल तो डारो।
संग-संग पिचकारी मारो।।

-संप्रति के सौजन्य से

घासफूस से सजीधजी होली का यह रूप सर्वत्र देखने को मिलता है। मेवाड़ में सेमल वृक्ष की कांटेदार फफोलेनुमा होली का विशेष प्रचलन है। कहते हैं, होलिका ने जब अग्नि में प्रवेश किया तब उसका पूरा शरीर ही झुलस गया था और पूरा अंग फफोलों से भर आया था। दूसरे दिन उसकी राख के पिण्ड बनाकर लड़कियों ने उन्हें दूब-पत्तों से सजाकर पूजा करना शुरू कर दिया और सौलह दिन तक उसकी पूजा की तो वे पिण्ड एक षोडशी की प्रतीक गणगौर के रूप में साक्षात् हुई। दूसरी ओर होली की राख को किसानों ने अपने खेत की पाल पर खाद के रूप में काम में लिया तो वहां साक्षात् होली के रूप में जो वृक्ष उग आया उसे होलिका के रूप में प्रतिवर्ष रोपकर कर उसकी याद बनाये रखना प्रारंभ कर दिया। पहले चित्र में कांटेदार हेमळ का होली रूप द्रष्टव्य है। **-फोटो- दिनेश कुदाल**

काला कानून वापस लेना लोकतंत्र की विजय

उदयपुर। राजस्थान विधानसभा मे प्रस्तुत किये गये लोक सेवक संरक्षण संबंधी विधेयक के मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे सिंधिया द्वारा वापस लेने पर जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार), उदयपुर ने प्रसन्नता जताई है। जार के जिलाध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि इस कानून के खिलाफ जार ने बढ़चढ़कर भाग लिया था और सरकार को काला कानून वापस लेने को मजबूर किया।

उन्होंने कहा कि इसके तहत गत दिनों जिला कलेक्टर महोदय को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन प्रस्तुत किया था। ज्ञापन में बताया गया कि यह विधेयक प्रदेश के अध्याय मे काला कानून है तथा यह लोकतंत्र के लिए खतरा भी है। इस विधेयक से न केवल लोकतंत्र कमजोर होगा वरन राजस्थान मे भ्रष्ट्राचार को बढ़ावा मिलेगा तथा किसी भी दागी लोक सेवक को यह एक प्रकार से बचाने के लिए सुरक्षा कवच का काम करेगा। यह विधेयक भारतीय संविधान की भावना के अनुकूल न होने के कारण अनैतिक व असंवैधानिक भी है। राजस्थान सरकार की ओर से जिस प्रकार इस विधेयक को पेश करने मे जल्दबाजी दिखायी गयी उससे सरकार की मंशा पर ही सवालिया निशान लग गये है।

यदि सरकार अपने आप को लोककल्याणकारी व संवेदनशील होने का दावा करती है तो इस प्रकार के विधेयक का कोई औचित्य नही है। हां यह सही है कि विधानसभा मे राज्य सरकार के पास बहुमत है पर इसका मतलब यह तो नही कि प्रदेश की जनता की भावना के प्रतिकूल कोई विधेयक वहां पर आनन फानन मे पास कर कानून बना दिया जाये। अगर ऐसा होता है तो यह आपातकाल के समय की याद दिलायेगा। जार के सभी सदस्यों ने मुख्यमंत्री द्वारा काला कानून वापस लेने पर प्रसन्नता जाहिर की है और इसे लोकतंत्र की विजय बताई है।

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरूवार 01 मार्च 2018

सम्पादकीय

हांस्या हरि मिलै

यूं तो हर समय ही मनुष्य को हंसते रहना चाहिये मगर बिना कारण कोई कैसे सहज हंसी निकाल सकेगा। अन्य प्राणी जितने भी हैं, घोड़े, गधे, गाय, हिरण, शेर, चीता, कागला, लोमड़ी को क्या किसी ने हंसते देखा है। लगता है मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो हंसी ठट्ठा, मनोविनोद कर सकता है।

हंसी को लोगों ने, डाक्टरों ने, वैद्यों ने रामबाण औषध कहा है। बिना मतलब हंसने वाले को बेवकूफ और पागल तक कहा गया है। सही भी है, मौके पर हंसना ही समझदारी है। इसके लिए हमारे देश में होली का त्यौहार चुना गया है।

यूं देखा जाय तो भारत की भूमि ही वह भूमि है जहां की प्रकृति का रचाव बड़ा अनोखा है। ऐसा रचाव पूरे विश्व में कहीं देखने को नहीं मिलेगा। इस धरती पर तो देवता तक रमण करने आते हैं। वे जब आते हैं तो जैसा चाहे रूप धर आते हैं इसीलिए कई बार पता ही नहीं चलता कि देवता किस प्राणी का स्वरूप लेकर आते हैं। उन्हें पहचानना बहुत मुश्किल है।

होली का त्यौहार उन्मुक्त हंसी का, दिल्लगी का, मसखरी का, मनोविनोद का, मजा देने और लूटने का, छेड़छाड़ का, रंगीन मिजाजी का त्यौहार है। इस त्यौहार पर दबी हुई कुंठित भावनाओं का शमन होता है। मर्यादा में रहकर कोई कुछ करे, खुली छूट है। यो यहां का हर त्यौहार और उत्सव कुछ न कुछ सीख देता लमछराता है।

प्रसिद्ध लेखक नथमल केड़ियाजी (93) का कहना है कि होली के अलावा भी कई प्रसंग ऐसे हैं जब आदमी मुस्कान बिखेरता है। बहुत से लोग बातचीत द्वारा हंसी की फुलझड़ियां छोड़ते देखे जाते हैं। किसी-किसी का तो चेहरा-मोहरा ही ऐसा होता है कि हंसबु करो। कई कथा, कहानियां, चुटकले, कहावतें, कविताएं, संस्मरण ऐसे हैं जो हंसी देते हैं।

काका हाथरसी तथा गोपालप्रसाद व्यास तो हास्यरस के ही कवि के रूप में ख्यात-प्रख्यात थे।

बतौर केड़ियाजी मुस्कान से लेकर अट्टहास तक की यात्रा बहुत जीवनदायिनी है। इससे हमारी धमनियों में बहते खून पर अच्छा असर पड़ता है। हंसी की बात सुनकर हमारा मन, मस्तिष्क, हृदय, आंख, कान, नाक और रोम-रोम तक नृत्यमय हुए लगते हैं। स्वस्थ एवं निरोग रहने के लिए हंसी से बढ़कर अन्य कोई दवा नहीं है।

केड़ियाजी को एकबार गणतंत्र दिवस पर किसी स्कूल में आमंत्रित किया गया। वंदे मातरम् के बाद कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। अपने उद्‌बोधन में केड़ियाजी ने वंदे मातरम् में प्रयुक्त सुहासिनी, सुमधुर भासिणी शब्द को लेकर ही सीख दी कि ये शब्द जीवन मंत्र हैं। हर बालक इन्हें अपने जीवन का साथी बनाये। उनकी सुगंध चारों ओर महकेगी। सदैव मुस्कान बनाये रखने से, हंसते रहने से, ठहाका मारने से भगवान तक की प्राप्ति संभव है।

पत्र-पिटारी

'शब्द रंजन' के 1 जनवरी के अंक में स्मृतियों के शिखर में 'वाणी साधक-सिद्धक प्रह्लाद जी शर्मा' से सम्बन्धित आलेख पढ़ दांतों तले अंगुली दबाना मुहावरा चरितार्थ हो गया। कोमल वाधवानी 'प्रेरणा' को तत्काल पढ़ सुनाया।

कोटा में मायका होते हुए भी हम कितने अनजान रहे। पढ़ते हुए लगा जैसे हम भी डॉ. भानावतजी के साथ थे। इसी अंक में छपा 'लंगड़ा आम ही नहीं दोहा भी' मजेदार रहा। योगेन्द्र बाली का 'तहरीक' भी ज्ञानवर्धक लगा। आपका पत्र लगातार-बारबार छपे। हर बार हम पढें। बार-बार प्रतिक्रिया दें। यही कामना।

-आशा गंगा प्रमोद शिरढोणकर,उज्जैन

'शब्द रंजन' में प्रकाशित लेख, टिप्पणी तथा राजस्थानी लोकसंस्कृति, लोकरचनात्मकता पर दुर्लभ सामग्री होती है। मैं उसे सुरक्षित कर लेता हूं तथा यथा अवसर उनका उपयोग भी कर लेता हूं। यह पत्रिका का सही श्रेष्ठ योगदान है। **-डॉ. रमेश कुंतल 'मेघ', पंचकूला**

अभिनव सम्मान

भोपाल की अभिनव कला परिषद् द्वारा उत्सव गणतंत्र 23 जनवरी को विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय अवदान के लिए बारह लोगों को 'शब्द शिल्पी' सम्मान प्रदान किया गया। संस्थापक सचिव पं. सुरेश तातेड़ के अनुसार उमाशंकर नगायच, श्रीकृष्ण बक्षी, डॉ. संध्यासिंह, योगन्द्रकुमार वर्मा को कवि, ज्योत्स्ना 'प्रवाह' को निबन्धकार, ज़फर नसीमी को शायर, राधेलाल विज धावने, डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, श्रीरामदेवे को साहित्यकार, डॉ. लता अग्रवाल को कहानीकार, विनोद निगम को नव गीतकार तथा सुनील मिश्र को फिल्म समीक्षक के रूप में विशिष्ट योगदान के लिए अभिनव शब्द शिल्पी अलंकरण प्रदान किया गया।

शुभ विवाह

उदयपुर में 21 फरवरी को श्रीमती विद्यादेवी-श्रीरोशनलाल कंठालिया की सुपौत्री अंचल (हनी) का शुभ विवाह देवेश के साथ सम्पन्न हुआ। अंचल के माता-पिता श्रीमती स्नेहलता-अनिल कंठालिया ने ब्याणजी-ब्याईजी श्रीमती निशा-श्री हेमचन्द्र भट्ट का भावभीना स्वागत कर विवाह की सभी रस्में पूरी की।

स्वर्ग से भी बढ़कर है मोबाइल

-निहाल अजमेरा-

बैकुण्ठ धाम में विराज रहे परम पितामह ब्रह्माजी ने महर्षि नारदजी को बुलाकर कहा- 'क्या बात है आजकल स्वर्गलोक में आने में लोगों की रूचि कम होती जा रही है? क्या भारत पुन: सोने की चिड़िया हो गया है? पता लगा कर मुझे सही स्थिति से अवगत करावो।'

जगत पिता की आज्ञा होते ही दूसरे दिन पुष्कर तीर्थ के ब्रह्मा मंदिर में नारदजी अवतरित हो गये। प्रात:काल जैसे ही मंदिर प्रांगण में उतरे उन्होंने देखा अनेक स्त्री-पुरुष, युवा-युवतियां हाथों में गुटका जैसी कोई वस्तु लिए गर्दन नीची करके बड़े तन्मय होकर उसे निहारते हुए आ रह हैं। पच्चीस वर्ष पूर्व जब वे ब्रह्माजी के मंदिर में दर्शनार्थ आए थे तो लोगों के हाथ में माला या हनुमान चालीसा का गुटका देखा था, अब यह गुटका सरीखी नई वस्तु देखकर उन्हें बहुत विस्मय हुआ।

> मोबाइल का मो मतलब मोहिनी छवि वाला, बा याने बादशाही दृश्यों का दिग्दर्शक, इ याने इक्षुरस समान मीठास प्रदान करने वाला एवं ल याने ललित सौंदर्य से परिपूर्ण। त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, महेश का साम्राज्य तो मात्र भारत पर ही है पर इसकी सम्पूर्ण वसुंधरा के कोने-कोने में पहुंच है। इसके 3जी, 4जी, 5जी के आगे माताजी, पिताजी, गुरुजी, नेताजी सब नतमस्तक हो जाते हैं। मोबाइल यंत्र व सेल्फी को मनुष्य के साथ स्वर्ग में कैसे लाया जाए ताकि स्वर्ग की आबादी बढ़े तथा वह वीरान होने से बच जाए।

वे एक युवक के पास जाकर खड़े हो गए। बड़ी खूबसूरत दाढ़ी वाला वह युवक 15 मिनिट से मंदिर प्रांगण में एकजुट होकर गुटका सरीखी उस वस्तु को हाथ में लिए निरन्तर उसे निहार रहा था। उसकी मुद्राएं भी पलटती जा रही थी। नारदजी ने सोचा दाढ़ी वाला युवक संतों की मंडली का कोई सदस्य हो सकता है। उस युवक का ध्यान आकर्षित करने हेतु उन्होंने धीरे से खरताल बजाई तो युवक ने थोड़ी सी गर्दन उठाकर संत को देखकर प्रणाम किया।

नारदजी उस दाढ़ी वाले युवा संत से बोले- भगत! इस जवानी में ही तुमने संन्यास ले लिया है अत: तुम्हारी भक्ति भावना देखकर मुझे खुशी हुई है। मैं स्वर्ग से आया हूं एवं चाहता हूं कि तुम मेरे साथ चलो। वहां सर्वत्र आनंद बिखरा पड़ा है। कुछ दिन वहां रहकर अपूर्व सुख भोगो एवं तुम जब भी चाहो मैं तुम्हें यहां पहुंचा दूंगा।' युवक बोला- 'महात्माजी मैं स्वर्ग तो अवश्य चलना चाहूंगा पर वहां मेरे हाथ में जो यंत्र है वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर का माबाइल वहां उपलब्ध है या नहीं।' नारदजी ने पूछा- 'भगत यह मोबाइल यंत्र क्या है? मोबाइल का शब्दार्थ क्या है? क्योंकि मैंने तो किसी भी शब्द शास्त्र में यह नाम नहीं पढ़ा है।' युवक बोला- 'महाराज! मोबाइल का मो मतलब मोहिनी छवि वाला, बा याने बादशाही दृश्यों का दिग्दर्शक, इ याने इक्षु-रस समान मीठास प्रदान करने वाला एवं ल याने ललित सौंदर्य से परिपूर्ण। नारदजी चकित होकर बोले- 'भगत! यह यंत्र तो अभी स्वर्ग में उपलब्ध नहीं है।'

महाराज! यह यंत्र मेरे शरीर का महत्वपूर्ण अंग हो गया है जो अनंत सुख व आनंद का भण्डार है। मेरी पांचों इन्द्रियां भी जब बीमार हो जाती हैं, मैं बिस्तर पर अनेक दिनों तक पड़ा रह जाता हूं, तब मेरे बेटे-बेटी, बहुएं, मित्र, सगे-सम्बन्धी व डॉक्टर भी थोड़ी-थोड़ी देर बात करके चले जाते हैं। मैडम भी दिन भर में 2-4 घंटे ही बैठ पाती है, पर यह 24 घंटे मेरा साथ देता है। अर्द्धरात्रि में भी बटन दबाते ही अपूर्व स्वर्गीय छवियां प्रस्तुत कर देता है एवं मैं सारे दुख-दर्द भूल जाता हूं।

महाराज! आप राम-कृष्ण के इस देश में कहीं भी चले जावें-धर्मसभा हो या शोकसभा, देवालय हो या मदिरालय या चिकित्सालय, पाठशाला हो या मधुशाला, रामधाम हो या मोक्षधाम, होटल हो या मोटल, मन्दिर हो या मस्जिद, गुरुद्वारा हो या रामद्वारा, करोड़पति हो या रोड़पति, राजरानी हो या मेहतरानी, नेता हो या अभिनेता, धर्मी हो या विधर्मी, मोदी हो या योगी सर्वत्र इनकी पहुंच है। त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, महेश का साम्राज्य तो मात्र भारत पर ही है पर इसकी सम्पूर्ण वसुंधरा के कोने-कोने में पहुंच है। विश्व भर में पग-पग पर यह रिद्धि-सिद्धि प्रदाता यंत्र लोगों के करकमलों की शोभा बढ़ाता हुआ देखेंगे। थोड़ी देर भी यदि यह यंत्र इधर-उधर हो जावे तो विश्व के सारे लोगों का जीवन अस्त-व्यस्त हो जावे, नीरस हो जावे। इस प्रकार यह लोगों के शरीर का 6वां अभिन्न अंग हो गया है। महाराज! इसलिए मेरा इसके बिना स्वर्ग जाना संभव नहीं होगा। कृपया क्षमा करें।

कृपया इसे अपने हाथ में थामें एवं इसकी शक्ति को भी परखें। नारजी ने सेल्फी हाथ में ली व उस पर अंगुली रखी। तत्काल उस पर एक चेहरा नजर आया। नारजी बोले- 'तुम कौन हो?' वह बोला- 'मैं इस युवक का मित्र हूं, लंदन रहता हूं।'

उसमें नारदजी ने अपना चेहरा भी देखा तो बहुत खुश हुए पर यह गजब का दृश्य देखते ही नारदजी का माथा भी ठनका। इधर-उधर -जिधर भी निगाह गई सबके हाथ में यह यंत्र देखकर उन्हें लगा कि अब इस देश के लोग पंचेन्द्रिय नहीं होकर 6 इन्द्रिय वाले हो गये हैं एवं यह 6ठीं इन्द्री नाक, कान, आंख, रसना, त्वचा से भी ज्यादा उपयोगी व सशक्त हो गई है।

यह अनुभव होते ही नारदजी ब्रह्मा मंदिर के दर्शन किये बिना ही बैकुण्ठ धाम की ओर उड़ चले व ब्रह्माजी की सेवा में उपस्थित हो गए। उन्हें यकायक वापिस आ जाने से श्री हरि ने पूछा- 'क्या पुष्कर नहीं गए?' नारदजी ने कांपते हुए सारी गाथा सुनाई और कहा- 'भारत भूमि पर आपके बनाए दो पाए मानव ने मोबाइल नाम का एक महायंत्र बना लिया है जिसके आगे लोगों को स्वर्ग के सारे सुख भी फीके लगने लग गए हैं इसलिए स्वर्ग लोग में लोगों की रूचि कम हो गई है।'

इसके 3जी, 4जी, 5जी के आगे माताजी, पिताजी, गुरुजी, नेताजी सब नतमस्तक हो जाते हैं। अत: अब आपका शासन व आदेश वहां चलना कठिन है। नारदजी से ये रिपोर्ट सुनते ही ब्रह्माजी गंभीरता से विचार करने लगे कि इस मोबाइल यंत्र व सेल्फी को मनुष्य के साथ इसे कैसे लाया जाए ताकि स्वर्ग की आबादी बढ़े व यह वीरान होने से बच जाए।

खोज खबर

वह लाठी जो होली पर लगी

होली की याद करूं तो बचपन की होली बार-बार याद आती है। वस्तुत: बचपन तो बचपन होता है। जो मस्ती और मनमौजी बचपन में होती है उसके बाद कभी नहीं हो सकती। होली भी जैसी तब मनाई जाती वैसी बाद में कभी मनती नहीं पाई गई।

तब संध्या को होलीथड़े बहिनें सजधज कर आतीं। भाई को गोठघूघरी देतीं। नाना प्रकार के होली के गीत गातीं। गोबर से जो आभूषणादि बनाकर लातीं वे सब होली माता को पहनाये जाते, बड़ी मालाओं के रूप में। मिट्टी के दो दीवलों को मिलाकर उन पर गोबर का लेप दे नारियल बनाया जाता। उस नारियल में फूली-भूंगड़े और पैसा रखा जाता। बजता हुआ यह नारियल भाई होली माता को चढ़ाता और उसमें का पैसा स्वयं रखता। इसमें बड़ा मजा आता।

होली को हम लोग खूब सजाते। बड़कुल्लों से, घासफूस से, फटे-पुराने कपड़े-लत्तों से उसकी टहनियां भर देते। अंधेरा होने पर टोलियां बनाकर घर-घर चुपछुप जाते और चोर बन डरते-घबराते किसी के बांस उठा लाते।

किसी के कंडे तो किसी की पूरी-अधूरी मूली ही उठा लाते। कभी-कभी विशेष जोश-होश में निसरनी-किंवाड़ तक उठा लाते और होली के चारों ओर ठीक से जमा देते। बड़े लोग अच्छा और अधिक सम्मान उड़ा लाने वाले को शाबाशी देते। सामान उठा लाते समय बड़ा जोश रहता। जानते हुए कभी किसी असहाय, गरीब का सामान नहीं लाते। अनजान में ले आने पर जब बाद में पता चलता तो पछतावा होता। धनवान और बेईमान को कभी नहीं छोड़ते। चोरी का यह सामान लाते समय बड़ी प्रसन्नता होती कि जैसे कोई लंका विजय कर आए हैं या कि किसी की जागीर ही हाथ लग गई है। कभी किसी मकान मालिक को पता लग जाता तो वह गालियों की बौछार देता। हम जान बचाई लाखों पाये, पसीना-पसीना हो भाग्य को भरोसा दे भागते।

सत्यानाशी के श्राप झेले पर मार कभी नहीं खाई। बड़ी हिम्मत, होशियारी, चतुराई और चालाकी के खेल थे ये। कुछ लोग बड़बड़ाते, गालियां देते, छड़ी घुमाते, होलीठाण आते और आक्रोश मुद्रा में बोलते, कौन थे वे जिन्होंने एक कंडा तक नहीं छोड़ा। बाहर टंगा सूपड़ा तक नहीं छोड़ा। मूसल, खिड़की, किंवाड़ के साथ पराई मांगी निसरनी ले गये। लाने वाले वहीं खड़े होते पर कोई भनक तक नहीं देते। पता लगने पर कौन किसको छोड़ता।

ऐसी बात नहीं थी कि हम अपने घरों से कुछ नहीं लाते। कुछ लोग बुला-बुला कर राजीमन से लकड़ियां, कंडे आदि देते। होली के लिए कुछ न कुछ देने में उन्हें प्रसन्नता इसलिए भी होती कि होली की आग उन्हें भी लानी है। फिर उस मोहल्ले की होली अधिकाधिक प्रभावी हो, यह वे भी तो चाहते। कुछ लोग होलीथड़े ही कह देते कि हमारे घर में या बाड़े में या नोहरे में फलां जगह फलां चीज पड़ी है, उठा ले आना। तब हम पूरी ईमानदारी बरतते और अन्य चीज उठाकर नहीं लाते। अन्य होलियों से भी होड़ाहोड़ी चलती रहती। हम भी जा-जाकर देखते रहते कि अन्य होलियों के लिए कितनी सामग्री जुटाई जा रही है। कुछ लोग बस्ती के बाहर भी जाते। गूंदी वृक्ष की छाल उतार लाते और उसके साथ होली के लगे कांटेदार सिंघाड़ों को मिलाकर चबाते और बार-बार अपनी लाल हुई जीभ को होठों पर फिराते ताकि होठ भी लाल हो जायें। तब पान से भी ज्यादा मजा इसमें आता था।

एक धुलंडी को तो कुछ ऐसी घटना घटी कि मेरा रंग खेलना ही बन्द हो गया। सुबह ही सुबह बिना कुछ खाये-पीये मैं अपनी पोल के बाहर चबूतरी पर आकर बैठ गया। साथ में अपनी बांस की पिचकारी और केवड़े के फूलों का रंग था। थोड़ी ही देर में एक बूढ़ा व्यक्ति आता दिखाई दिया।

मैंने सोचा इस बिचारे को कौन रंग छांटेगा और धुलंडी खेलायेगा अत: अपनी रंग भरी पिचकारी ही मैंने उस पर चला दी। ज्योंही मैंने पिचकारी चलाई कि उसने अपने हाथ की लाठी मेरे पर चला दी। वह लाठी मेरी कुहनी में ऐसी लगी कि सड़क पर वहीं गच खा गिर पड़ा। मुझे उल्टी होने लग गई और काले-पीले दिखाई देने लगे। जैसे-तैसे मैं संभला और चुपचाप अपने घर में जा दुबका। किसी को इस वारदात का पता नहीं चलने दिया। कहता तो और पीटा जाता। मुझे याद है, उस दिन मैंने कोई धुलंडी नहीं खेली बल्कि उसके बाद भी रंग छांटने और होली खेलने में मेरी कोई रुचि नहीं रही। आज भी यही स्थिति बनी हुई है।

जब कभी भी बचपन की यह घटना याद करता हूं, मेरी कुहनी की हड्डी उसी तरह का दर्द देने लग जाती है जैसी तब लाठी खाकर दर्देदिल हुई थी।

पोथीखाना

निर्भय मीरां के बहाने.....

– डॉ. शरद पगारे –

डॉ. पगारे ऐतिहासिक उपन्यासों के ख्यातनाम लेखक हैं। शब्द रंजन के लिए उन्होंने डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित 'निर्भय मीरां' के बहाने इतिहासजनित साहित्य अथवा साहित्य संदर्भित इतिहास पर अपना तीक्ष्ण और पैना नजरिया प्रस्तुत किया है। साथ ही उन आलोचकों की खबर भी की है जो ऐतिहासिक उपन्यासों पर अपनी आई-गई समझ व्यक्त करते हैं। डॉ. पगारे का यह कथन विचारणीय है- 'साहित्य में कमजोर साहित्यकार तो चल जाएगा पर कमजोर इंसान नहीं।'

'निर्भय मीरां' कृति में लेखक डॉ. महेन्द्र भानावत ने अपने को मीरां के वंशधर के रूप में प्रस्तुत किया है। शोध-दर्शन में उन्होंने वंदनीय मीरांजी के बारे में फैले अनेक भ्रमों का निवारण ही नहीं किया, उनके जीवन की सही, सच्ची ऐतिहासिक प्रामाणिक जानकारी भी उपलब्ध कराई है। कारण कि लेखक ने उन सारे स्थानों एवं तीर्थों पर जाकर प्रामाणिक सामग्री-जानकारी एकत्र की है। उसके बाद लेखन दिया है। मैं उनके श्रम की सराहना ही नहीं, वंदना भी करता हूं।

डॉ. भानावत राजस्थानी लोकसाहित्य, संस्कृति के अध्येता एवं रिसर्चर हैं। उन्होंने उदयपुर के भारतीय लोककला मण्डल के संस्थापक देवीलाल सामर के साथ राजस्थानी गीतों, वार्ताओं तथा साहित्य-संस्कृति की मिठास के माधुर्य से देश को जो रसपान कराया वह अभिवंदनीय है। कला मंडल ने राजस्थानी लोकनृत्यों के सौन्दर्य का देश में ही नहीं विश्व के अनेक देशों में परिचय कराया वह सारस्वत साधन्त है। यह मेरे लिए प्रेरणादायी है।

महेन्द्र भाई 'शब्द रंजन' के माध्यम से राजस्थान के जिन स्मरणीय देव पुरुषों, देवियों के अवदान से परिचित करा रहे हैं वह ऐतिहासिक अवदान है। वर्ना आज के प्रचारात्मक युग में हर कोई अपनी लघु उपलब्धियों का ढोल पीटने में व्यस्त है। उनकी जादुई सारस्वत कलम इन सारस्वत पुत्र-पुत्रियों की साधना का ऋण चुका रहा है। सहृदय उदार सृजनधर्मियों का मूल्यांकन कर सच्चे साहित्य मनीषी के रूप में वे प्रफुल्ल हो रहे हैं। साहित्य में कमजोर साहित्यकार तो चल जायेगा, कमजोर इंसान नहीं। भानावतजी सच्चे, समर्थ, सदाचारी, उदारमना, ईमानदार मानव होने से श्रेष्ठ लेखक भी हैं। शब्द रंजन उनकी रचनाओं के कारण ही सुपठनीय है।

'निर्भय मीरां' में कुछ ऐतिहासिक विसंगतियों की ओर ध्यान आकर्षित करने का दुस्साहस कर रहा हूं। अधिकांश हिन्दी लेखकों तथा आलोचकों में भी यह कमी है। यहां तक कि हिन्दी आलोचना के शिखर-मुख्य डॉ. नामवरसिंह, अशोक वाजपेयी, डॉ. धनंजय वर्मा, डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय आदि भी इसी श्रेणी में आते हैं। वे भी अपवाद नहीं हैं। वे कविता, कथा, उपन्यास, व्यंग्य जो इतिहास पर आधारित नहीं है, की समझ, सटीक आलोचना सफलतापूर्वक करते हैं। रचना की आत्मा में प्रवेश कर उसके मर्म के प्लस-माइनस तत्वों के अन्वेषण-विश्लेषण द्वारा नीर-क्षीर-विवेक सम्मत आलोचना पेश करते हैं। लेकिन ऐतिहासिक कथाकारों की नींव पर आधारित ऐतिहासिक उपन्यासों, कहानियों, महाकाव्यों के ऐतिहासिक पक्ष की आलोचना को टाल जाते हैं क्योंकि वे इतिहास-ज्ञान-शून्य हैं। ऐतिहासिक उपन्यासकार चालाकी से ऐतिहासिक तथ्यों के साथ जो खिलवाड़ करता है, उसे वे पकड़ नहीं पाते। अत: सभी आलोचक डॉ. नामवरसिंह समेत ऐतिहासिक उपन्यासों की आलोचना से कतराते हैं। आलोचना का उनका ज्ञान ऐतिहासिक कथानकों के बारे में अपूर्ण ही नहीं, अज्ञानता से भरा है। रचनाकार जो ऐतिहासिक विषय पर लिख रहा है, उसे जानकारी न होने के लिए एक बार माफ किया जा सकता है किन्तु समीक्षक को नहीं। लेकिन रचनाकार को भी लिखने के पहले कृति को प्रामाणिकता देने के लिए पर्याप्त शोध करना चाहिये।

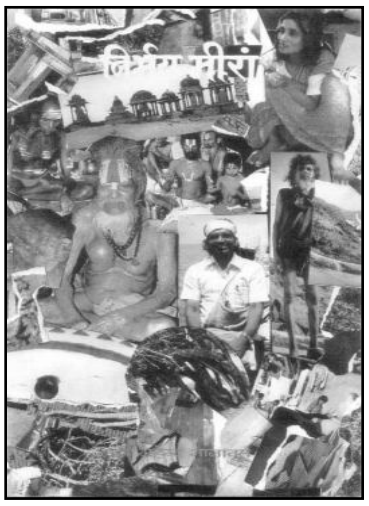

20 फरवरी 1989 को लखनऊ जाकर मैंने अमृतलालजी नागर का साक्षात्कार लिया था। मेरी प्रसिद्ध ऐतिहासिक उपन्यास-कृति 'गुलारा बेगम' से वे बड़े प्रभावित थे। उन्होंने राय दी थी कि शरदजी जब भी ऐतिहासिक विषय पर लिखें, इतिहास की अच्छी पड़ताल करें। ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़ें मरोड़ें नहीं। ऐतिहासिकता कृति को प्रामाणिकता देती है। उन्होंने यह भी कहा कि सोमनाथ प्रकरण में मैंने मुहम्मद गोरी द्वारा मंदिर पर आक्रमण कर लूटने का लिखा है। सुलतान मोहम्मद गोरी सन् 1215 के आसपास भारत आया था। उसने पृथ्वीराज चौहान से तेहरान के रणक्षेत्र में लड़ उन्हें हराया। वापस जाते वक्त लाहौर के पास हिन्दू खोखरों ने उसकी हत्या कर दी थी। मुहम्मद गोरी नहीं, सुलतान महमूद गजनी ने सोमनाथ मंदिर लूटा और शिवलिंग के टुकड़े किये। उनमें से कुछ टुकड़ों को गजनी ने मस्जिद की सीढ़ियों में लगाया था।

ऐसे ही डॉ. भानावतजी ने प्रात:स्मरणीय मीरांबाई का कबीर से मिलने का लिखा है। दोनों के समय में दो सौ साल का ऐतिहासिक अंतर है। डाकोर तुलसी कभी नहीं गए। प्रसिद्ध उपन्यासकार अमृतलालजी नागर ने अपनी बहुचर्चित-बहुप्रशंसित कृति 'मानस का हंस' में इसका उल्लेख नहीं किया है। उपन्यास पर्याप्त शोध के बाद लिखा है। तुलसी अयोध्या और काशी में ही रहे। कबीर साहब का स्वर्गवास काशी में नहीं, पास के गांव मगहर में हुआ था जहां आज भी उनकी समाधि है।

डॉ. भानावत ने नई जानकारी दी है कि मीरांजी के सारे कृष्णभक्ति के भजन उनके द्वारा प्रणीत नहीं हैं। जानकारी चौंकाने वाली है लेकिन फिर भी 'निर्भय मीरां' पर्याप्त शोध के बाद प्रणीत की गई है। चित्तौड़-मेवाड़ त्याग के बाद उनकी जीवन-यात्रा की जो प्रामाणिक सामग्री उन्होंने दी है उसका ऐतिहासिक एवं साहित्यिक महत्व है। डॉ. भानावत देवीलाल सामर के योग्य उत्तराधिकारी हैं। सामरजी के ही नहीं, पुण्य श्लोका राजस्थान की भक्तशिरोमणि इतिहासजयी मीरांजी के सच्चे वंशधर हैं।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/

कहावतों के कहकहे (6)

(70) करणी रा फल लागै

(71) करवण जतन धन रौ
करै कायर जीव
जतन सूरौ जतन उण रौ
करै जिण रौ खावै अन्न

(72) करम आड़ो कागज व्है
तौ उड़ जावै, भाटो
थोड़ी उड़ै

(73) करम कणी खोली नै
थोड़ी देख्यो है

(74) करम कमाई रै जोड़ो
व्है जदी है

बीएसडीयू बेस्ट इंडस्ट्री-एकेडेमिया इंटरफेस अवार्ड से सम्मानित

उदयपुर। 'स्विस ड्यूअल सिस्टम ऑफ एजुकेशन' वाली देश की एकमात्र यूनिवर्सिटी- भारतीय स्किल डेवलपमेंट यूनिवर्सिटी (बीएसडीयू), जयपुर को एडटेक रिव्यू अवार्ड्स-2018 में बेस्ट इंडस्ट्री-एकेडेमिया इंटरफेस अवार्ड से सम्मानित किया गया है।

पुरस्कार ग्रहण करते हुए भारतीय स्किल डेवलपमेंट यूनिवर्सिटी (बीएसडीयू), जयपुर के उप कुलपति ब्रिगेडियर (डॉ.) सुरजीतसिंह पाब्ला ने कहा कि बेस्ट इंडस्ट्री-एकेडेमिया इंटरफेस अवार्ड से सम्मानित होने पर हमने गर्व का अनुभव हो रहा है, क्योंकि हमने हमेशा विश्वविद्यालय में कौशल शिक्षा के माध्यम से उद्योग जगत की मांगों को पूरा करने में विश्वास किया है। कौशल शिक्षा का उद्देश्य अनुभव के साथ पर्याप्त सैद्धांतिक इनपुट के साथ छात्रों को लैस करना है।

'अनलिमिटेड एक्सेस' का शुभारंभ

उदयपुर। भारत की अग्रणी क्रेडिट इंफोर्मेशन कंपनी ट्रांसयूनियन सिबिल ने एक नए सदस्यता उत्पाद 'अनलिमिटेड एक्सेस' के शुभारंभ की घोषणा की है ताकि भारतीय उपभोक्ता अपने सिबिल स्कोर और रिपोर्ट तक त्वरित पहुंच बना सकें। सही निर्णय लेने के लिए उपभोक्ताओं को अपनी क्रेडिट जानकारी तक पहुंच की आवश्यकता होती है और एक बेहतर सीआईबीआईएल स्कोर उन्हें क्रेडिट प्रस्तावों तक तेजी से पहुंच बनाने में मदद कर सकता है।

सिबिल में डायरेक्ट टु कंज्युमर इंटरेक्टिव के हेड ऋषिकेश मेहता ने क्रेडिट को लेकर उपभोक्ताओं की बदलती जरूरतों को साझा करते हुए कहा कि सीआईबीआईएल आंकड़ों के अनुसार, 2013 से 2017 के बीच रिटेल क्रेडिट के लिए पूछताछ तीन गुना हो गई है।

श्री चंद्रा का सफलतम वर्ष

उदयपुर। एन चंद्रशेखरन, टाटा ग्रुप के 150 साल पुराने इतिहास में पहले गैर-पारसी चेयरमैन हैं। चंद्रशेखरन ने 21 फरवरी को इस पद पर रहते हुये अपना एक सफल वर्ष पूरा कर लिया है।

चंद्रशेखरन ने टाटा ग्रुप में अपने पूर्ववर्ती चेयरमैन को अचानक बर्खास्त किये जाने के बाद पैदा हुये संकट के दौर से उबारने में कामयाबी हासिल की और वे ग्रुप से जुड़े सभी हितधारकों को संतुष्टि का उच्च स्तर प्रदान करने में सफल रहे। ऐसी संभावना है कि चंद्रशेखरन ग्रुप द्वारा किये गये अब तक के सबसे बड़े अधिग्रहण के साथ दूसरे साल की बेहतरीन शुरूआत कर सकते हैं। एन चंद्रशेखरन लोगों के बीच में श्री चंद्रा के तौर पर लोकप्रिय हैं और टाटा से बाहर तीसरे ऐसे व्यक्ति हैं जिनके द्वारा ग्रुप का नेतृत्व किया जा रहा है।

'प्रोजेक्ट सीड' लॉन्च

उदयपुर। थिसेनक्रप एलिवेटर ने एक गैर-सरकारी संगठन एसओएस चिल्ड्रंस के साथ साझेदारी करते हुए बेरोजगारी की गंभीर दर से जूझ रहे लोगों को सहारा देने के लिए एक पहल में हाथ बंटाया है। थिसेनक्रप और उनके कर्मचारी भारत के लगभग 130 युवाओं को सरल बुनियादी कौशल प्रशिक्षण, कॅरियर मार्गदर्शन, उद्यमशीलता सहायता और वास्तविक कार्य अनुभव देंगे। इसका उद्देश्य युवा लोगों को आत्मनिर्भर बनाना और रोजगार के लिए तैयार करना है। भारत में यह पहल 'प्रोजेक्ट सीड' का हिस्सा है। थिसेनक्रप एलिवेटर के सीईओ एंड्रियास सिचरेन्बेक ने कहा कि भारत से पहले, कोलम्बिया और ब्राजील में एसओएस के युवा थिसेनक्रेप और उसके कर्मचारियों से इसी तरह का प्रशिक्षण हासिल कर चुके हैं। प्रोजेक्ट सीड की लॉन्चिंग के साथ थिसेनक्रेप 'यूथकैन!' पहल का हिस्सा भी है। यह एक ऐसी पहल है जो गैर-सरकारी संगठनों, निजी क्षेत्र, सरकारों और युवाओं के बीच सामंजस्य और परस्पर प्रतिबद्धता वाले मजबूत गठबंधन को जन्म देती है, साथ ही जीवन में आगे बढ़ने के लिए उत्सुक युवाओं को सहारा मिलता है। प्रोजेक्ट सीड में कंपनी का लक्ष्य 'कौशल भारत मिशन' की भावना के अनुरूप रोजगार योग्यता को बढ़ाना और इस राह में आने वाली बाधाओं को उजागर करना है।

प्रोबायोटिक ड्रिंक याकुल्ट लाइट का अनावरण

उदयपुर। प्रोबायोटिक श्रेणी में अपनी जगह बनाने के बाद, याकुल्ट डैनोन इंडिया प्रा. लि. ने एक और उत्पाद याकुल्ट लाइट का संकलन कर भारत में अपने उत्पाद पोर्टफोलियो का विस्तार किया है। गौरतलब है कि याकुल्ट डैनोन इंडिया प्रा. लि. याकुल्ट होंशा और डैनोन का 50-50 प्रतिशत का संयुक्त उपक्रम है।

इस नए उत्पाद का अनावरण फिटनेस आइकन और बॉलीवुड अदाकारा शिल्पा शेट्टी कुंद्रा ने किया। इस मौके पर याकुल्ट डैनोन इंडिया प्रा. लि. के मैनेजिंग डायरेक्टर मिनोरु शिमादा और याकुल्ट डैनोन इंडिया प्रा. लि. की जनरल मैनेजर-साइंस ऐंड रेगुलेटरी अफेयर्स डॉ. नीरजा हजेला मौजूद थीं। याकुल्ट लाइट, सिग्नेचर याकुल्ट उत्पाद का सहयोगी उत्पाद है, जिसमें समान विशिष्ट प्रोबायोटिक लैक्टोबेसिलस कैसेई के स्ट्रेन शिरोटा (एलसीएस) समान मात्रा (6.5 बिलियन) में है। एलसीएस 80 वर्षों के गहन शोध के कारण वैज्ञानिक रूप से सत्यापित है। लगातार पीने से यह पाचन दुरुस्त करता है और प्रतिरक्षा-शक्ति को बेहतर बनाता है। घटे हुए शर्करा स्तर और विटामिन डी और ई के साथ, याकुल्ट लाइट सेहत की रोजमर्रा जरूरतें पूरी करता है। यह सभी आयु-वर्गों के लिए उचित उत्पाद है। इसमें चीनी और कैलोरी की मात्रा कम होती है।

वार्षिकोत्सव 'सामयक 2018' आयोजित

उदयपुर। गीतांजली डेंटल कॉलेज एवं रिसर्च इंस्टीट्यूट, उदयपुर में 'सामयक-2018' वार्षिकोत्सव का आयोजन किया

गया। प्रारंभ में मुख्य अतिथि गीतांजली ग्रुप के कार्यकारी निदेशक अंकित अग्रवाल, मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. किशोर पुजारी एवं गीतांजली डेंटल कॉलेज एवं रिसर्च इंस्टीट्यूट के प्राचार्य डॉ. निखिल वर्मा ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने गरबा, घूमर, भरतनाट्यम, हिप-होप, रेट्रो, वेस्टर्न स्टाइल पर एकल, युगल व ग्रुप में अद्भुत नृत्य प्रस्तुत किया तो तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा सभागार गूंज उठा। टियारा और बाइकर्स थीम पर विद्यार्थियों ने रैम्प वॉक कर जलवे बिखेरे। कार्यक्रम के दौरान खेल प्रतियोगिताएं भी आयोजित हुई जिनमें चेस, कैरम, टेबल टेनिस, बैडमिंटन, षॉट पुट, ज्वैलिन थ्रो, डिस्कस थ्रो, सैक रेस, टग ऑफ वार, थ्री लेग रेस, सितालिया, क्रिकेट के अतिरिक्त साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित हुए। अंत में मुख्य अतिथियों ने सभी विजेताओं को प्रमाण पत्र से सम्मानित किया। धन्यवाद ज्ञापन नेहा तोशनीवाल ने दिया।

पिता व बेटों को मिली मोतियाबिंद से निजात

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस (पीआईएमएस) हॉस्पिटल, उमरड़ा में

चिकित्सकों ने जन्मजात मोतियाबिंद की परेशानी से जूझ रहे पिता व दो पुत्रों की दोनों आंखों का सफल ऑपरेशन किया है।

पीआईएमएस के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि अमृतलाल मीणा (31) एवं इसके पुत्र साहिल (8) व सुमित (6) को दोनों आंखों में जन्मजात मोतियाबिंद की परेशानी थी। इस बीमारी के चलते अमृतलाल ने कई अस्पतालों के चक्कर लगायें लेकिन उसकी समस्या का निदान नहीं हो पाया। अमृतलाल को किसी ने पीआईएमएस हॉस्पिटल, उमरड़ा के बारे में बताया। इस पर गत दिनों अमृतलाल पीआईएमएस आया और मोतियाबिंद का ऑपरेशन करवाया। परिणाम से संतुष्ट होने पर दो दिन बाद ही अमृतलाल ने अपने दोनों बच्चों जिन्हें भी जन्मजात मोतियाबिंद की परेशानी थी का ऑपरेशन करवाया। ऑपरेशन नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. रिषेन्द्रसिंह सिसोदिया, रीता गौर, राजेश सालवी द्वारा किया गया।

'एजीएल यूनिवर्स' शोरूम का शुभारंभ

उदयपुर। भारत की सबसे बड़ी टाईल कंपनियों में से एक एशियन ग्रेनिटो इण्डिया लि. ने उदयपुर के

शोभागपुरा सौ फीट रोड़ पर अपने पहले लार्ज फोर्मेट टाईल शोरूम 'एजीएल यूनिवर्स' का शुभारंभ किया।

शोरूम का उद्घाटन एशियन ग्रेनिटो इण्डिया लि. के चेयरमैन एवं प्रबन्ध निदेशक कमलेश पटेल, प्रबंध निदेशक मुकेश पटेल, एसोसिएट डायरेक्टर पंकज पटेल, एसोसिएट डायरेक्टर-ग्रेसटेक शौनक पटेल एवं एवीपी ग्रेसटेक राहुल शर्मा द्वारा किया गया। कमलेश पटेल ने कहा कि 2800 वर्गफीट में फैला यह शोरूम राजस्थान में कंपनी का पहला 'एजीएल यूनिवर्स' शोरूम है जो कंपनी की सम्पूर्ण टाईल रेंज डिस्प्ले करेगा। इसमें डिजिटल सेरेमिक वॉल एवं फ्लोर टाईल्स, ग्लेज़्ड विट्रिफाईड एवं पॉलिश्ड ग्लेज़्ड विट्रिफाईड टाईल्स, हेक्साकॉन टाईल्स, इंजीनियर्ड मार्बल एवं क्वार्ट्ज़ स्टोन शामिल हैं।

'सामुदायिक भागीदारी में उत्कृष्टता' अवार्ड

उदयपुर। हाल ही में कोच्चि में एसोसिएशन ऑफ हेल्थ केयर प्रोवाइडर इंडिया द्वारा आयोजित पांचवें ग्लोबल कॉनक्लेव अवार्ड समारोह में गीतांजली मेडिकल

कॉलेज एवं हॉस्पिटल, उदयपुर को 'सामुदायिक भागीदारी में उत्कृष्टता' अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह अवार्ड गीतांजली के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. किशोर पुजारी एवं वरिष्ठ महाप्रबंधक सुकांता दास को केरेला की स्वास्थ्य मंत्री केके शैलजा एवं बिशप एंड्रयूज ने प्रदान किया। एसोसिएशन का यह पांचवां अवार्ड समारोह था जिसमें कुल 8 श्रेणियां शामिल थी।

'कट, प्ले एंड लर्न' ऑफर की पेशकश

उदयपुर। कोलगेट-पामोलिव (इंडिया) लि. ने अपने कट, प्ले एंड लर्न ऑफर का चौथा संस्करण लॉन्च किया। कोलगेट की यह सालाना पेशकश टूथपेस्ट के डिब्बों के अंदर छपे विभिन्न किरदारों का उपयोग करते हुए बच्चों को अपनी कहानियां बुनने के लिए प्रोत्साहित करती है। इस तरह इस ऑफर से उनकी कल्पनाशक्ति और संज्ञानात्मक कौशल को निखारने में मदद मिलती है। कोलमेट-पामोलिव (इंडिया) लि. के प्रबंध निदेशक इसाम बचलानी ने कहा कि यह पेशकश कोलगेट स्ट्रांग टीथ के लिमिटेड एडिशन पैक्स पर उपलब्ध है। इस वर्ष के 'कट प्ले एंड लर्न' ऑफर की थीम 'जादुई जंगल सफारी' है। इसमें पैक्स के तीन अलग-अलग सेट शामिल हैं, जो (अ) खजाने की खोज, (ब) कैंपिंग, और (स) सफारी का अनुभव के इर्द-गिर्द चलते हैं।

'ग्लोबल वाटर बॉडीज' का शुभारंभ

उदयपुर। स्विमिंग पूल, वाटर पार्क एवं फाउंटेन से संबंधित सभी तरह के फ़िल्टर प्लांट, पानी सफाई की मशीन्स, केमिकल्स, आउटडोर फर्नीचर की उपलब्धता एक ही जगह सुनिश्चित करने के लिए देश के पहले रिटेल स्टोर 'ग्लोबल वाटर बॉडीज' का उद्घाटन स्वामीनगर,100 फीट रोड़, भुवाणा में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष विमल कटारिया एवं महामंत्री संदीप कोठारी ने जैन संस्कार विधि से किया। जैन मंत्रोच्चारण संस्कारक सुबोध दुग्गड़ ने करवाया।

डायरेक्टर अभिषेक पोखरना ने बताया कि यहां स्विमिंग पूल से संबंधित सभी तरह के सामान को डिस्प्ले में लगाया गया। इस रिटेल शोरूम पर लेटेस्ट टेक्नोलॉजी एवं कम मेंटेनेंस के सभी तरह के पूल के सामान होलसेल दाम पर मिलेंगे। प्रारंभ में सवाईलाल पोखरना, कल्याणसिंह पोखरना, पदमचंद पटावरी एवं सभा संस्थाओं के पदाधिकारियों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री का सम्मान किया।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan,** UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

छेड़ादेव.....

(पृष्ठ एक का शेष)

पुरुष भी, *'चरखी चलि रही बड़ के नीचे रस पी जा लांगुरिया'* जैसे गीत गाकर जोश-खरोश में मदछक हो रहे हैं। मैं इन सारे माहौल को देख-सुन कर लांगुरिया के देवत्व और उसके लुंगाड़पन में खो जाता हूं। इतने में कुछ पकी उम्र की महिलाओं में से आवाज आती है- 'जरा ओड़े-डोड़े रहियो नशे में लांगुर आवेगो।'

भक्त लोग लांगुरिया को भेंट-पूजा में गांजा चढ़ाते हैं। गीतों में वर्णन आता है कि इसके लिए दस बीघा जमीन में गांजा बोया है। जब यह नशे में चूर होकर आयेगा, तो छेड़खानी करेगा। खासतौर पर उन्हें छेड़ेगा, जिनके दिन हरी-हरी चूड़ियां पहनने के हैं। काजल-टींकी दी हुई है। उन्हीं को यह नाना नाच नचायेगा। उन्हीं को इससे ओड़ी-डोड़ी रहने की जरूरत है।

अपनी सर्वेक्षण यात्राओं में मैंने इधर लकड़ी के बने आदमकद राजसी लांगुरिये देखे हैं जिनकी शीतला सप्तमी को घर-घर पूजा होती है। केलादेवी और उसके लांगुरिये की कितनी मान्यता है यह इसी से प्रमाणित होता है कि सन् 1975 में 2 लाख 65 हजार रूपये नकद, 38 हजार रूपये चांदी, 3 लाख 35 हजार रूपये का 6 किलो सोना, 10 हजार रूपये का कपड़ा, 1 लाख 65 हजार रूपये के 30 हजार नारियल और 75 हजार रूपये दुकानों के किराये से आमदनी हुई। इसके तीन वर्ष बाद चढ़ावे का अंदाज लगाइए, जब 10 लाख व्यक्तियों ने इस मेले में भाग लिया और 2 लाख नारियल भेंट चढ़ाये गये। अब इस वर्ष की कल्पना आप स्वयं कर लीजिए, छेड़ादेव लांगुरिये का कमाल आपको पता चल जायेगा।

अनूठे देव.....

होली के पास एक दिव्य चीर था जिस पर अग्नि भी अपना प्रभाव नहीं छोड़ पाती थी। होली उसे ओढ़ प्रहलाद को अपनी गोद में लिए अग्नि में प्रवेश कर गई। इससे होली तो भस्म हो गई पर प्रहलाद बच गया। इधर होली से शादी करने धूमधाम से इलोजी की बरात आ पहुंची। जैसे ही इलोजी को होली की इस घटना का पता लगा वे अपनी सुधबुध खो बैठे और होली के विरह में आजीवन कुंवारे रह विक्षिप्त हो गये।

ऐसी स्थिति में वे आम लोगों में हंसी-मजाक और तिरस्कार के पात्र बने। इसीलिए इलोजी को निसंतान औरतें देवता के रूप में पूजती हैं। उन्हें नारियल अगरबत्ती की धूप देती हैं। उनके लिंग को पुष्प चढ़ाती हैं। कुम्कुम् के छींटे देती हैं। नवदंपत्ती उन्हें धूप-दीप कर उनसे शुभाशीष मांगते हैं। वहीं इलोजी एक भौंडे के रूप में भी याद किये जाते हैं। 'इलोजी रो काड़' नाम से एक भद्दी गाली भी हमारे यहां बड़ी चर्चित है। नामर्द आदमी के लिए भी गाली-रूप में इलोजी शब्द का प्रयोग किया जाता है। होली के दिनों में कहीं-कहीं इलोजी की आदमकद आकृति भी प्रदर्शित की जाती है तब लिंग ही उसका सर्वाधिक विचित्र वैशिष्ट्य रूप लिए होता है जो प्रत्येक की निगाह को अपनी ओर बांधे रखता है। उदयपुर की गणेशघाटी पर तो 'इलोजी का नीम' आज भी बड़ा प्रसिद्ध है। किसी समय यहीं से एक व्यक्ति होली पर इलोजी का स्वांग लिए निकलता था जो पूरी काली पोशाक पहनता था। यहां तक कि अपना चेहरा भी वह गहरे काले रंग में रंगा रखता था।

हास्य देव.....

कहते हैं, तभी से होली खेलने की प्रथा प्रारंभ हुई। लोगों ने भस्म तथा धूल एक-दूसरे पर लगाना शुरू कर दिया, जो धीरे-धीरे रंग और गुलाल लगाने में बदलती गयी। यह हास्य त्यौहार इलोजी की ही देन है।

मारवाड़ में होली जलाने से पूर्व इलोजी का श्रृंगार किया जाता है। उनकी प्रतिमा पर नया रंगरोगन कर, साफा वगैरह बांध कर दूल्हे का रूप दिया जाता है। इलोजी के सम्मुख बैंड-बाजे बजाये जाते हैं। नृत्य किया जाता है। इलोजी को लक्ष्य कर लोकगीत गाये जाते हैं। नाना प्रकार के मजाक किये जाते हैं। यदाकदा फूहड़ बातें भी कही जाती हैं। हास्य का अवलंबन लेकर बांझ औरतों को कहा जाता है कि यदि इलोजी की उपासना करेंगी, तो संतान प्राप्ति होगी।

इलोजी का व्यक्तित्व ही हास्य से परिपूर्ण है। अगर कभी मारवाड़ के किसी बजुर्ग से इलोजी के बारे में आप पूछेंगे तो वे एक गूढ़ मुस्कराहट से जरूर मुस्करायेगा।

इलोजी.....

यह भी माना जाता था कि होलिका में ढूंढा राक्षसी निवास करती है, जो बच्चों को ग्रास बना लेती है। सो, जनता होलिका की मृत्यु से दुखी नहीं थी। उसने इलोजी को पागलों की तरह व्यवहार करते देखा, तो उनका उपहास करने लगी। होलिका की मृत्यु के बाद इलोजी आजन्म कुंवारे रहे। पागलों की तरह यहां-वहां भटकते, उपहास का पात्र बनते रहे। इसके बावजूद, समाज में उन्हें आदर्श प्रेमी का दर्जा मिला। आज भी राजस्थान और हिमाचल प्रदेश में इलोजी को विशेष मान्यता प्राप्त है। राजस्थान में इलोजी को कहीं फागुन देवता कहा गया है, तो कहीं नगर रक्षक भैरूजी। अनेक स्थान उनके नाम से बने हैं, जैसे-इलोजी बाजार, इलोजी चौराहा आदि। इन स्थानों पर राजसी वेशभूषा में उनकी प्रतिमाएं भी लगी हैं। विवाह के सानंद संपन्न होने की कामना लेकर विवाह के अवसर पर इनका पूजन करने का भी विधान है। जिन व्यक्तियों का विवाह नहीं होता, उन्हें राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में प्राय: व्यंग्य में इलोजी कहा जाता है। कई जगहों पर इलोजी का स्वांग भरने की भी परंपरा है। जैसे हिमाचल प्रदेश में चैत्र में मनाए जाने वाले चैमोल पर्व में इलोजी के स्वांग भरे जाते हैं।

'बाय वन गेट टू डायमंड' एक्ज़ीबिशन

उदयपुर। दुनिया के बेहतरीन और शानदार ढंग से तैयार किए गए प्रीमियम क्वालिटी के सॉलिटेयर डायमंड्स की एक्सक्लूसिव एक्ज़ीबिशन 'बाय वन गेट टू डायमंड' का 23 से 26 फरवरी तक डीपी ज्वेलर्स आयाजित हुई। शुभारंभ

डिवाइन सॉलिटेयर्स के संस्थापक और प्रबंध निदेशक जिग्नेश मेहता एवं डीपी आभूषण लिमिटेड के डायरेक्टर अनिल कटारिया ने किया। इस मौके पर आशिष सहलोत, मोहित सोनी भी उपस्थित थे।

एक्ज़ीबिशन में डिवाइन सॉलिटेयर्स ने परफेक्शन के साथ तराशे गए सॉलिटेयर डायमंड्स रेंज की पेशकश की। इन्हें एथिकल सोर्सिंग, क्वालिटी सर्टिफिकेशन, इन्वेस्टमेंट वैल्यू और मूल्य-निर्धारण में पारदर्शिता रखते हुए 'स्टेट ऑफ़ आर्ट' पैकेजिंग में संजोया गया। इस प्रदर्शनी में एक सॉलिटेयर डायमंड की कीमत पर 2 शानदार सॉलिटेयर डायमंड्स प्रदान किये गये।

डिवाइन सॉलिटेयर्स के संस्थापक और प्रबंध निदेशक जिग्नेश मेहता ने कहा कि हमें डीपी ज्वेलर्स से जुड़े होने पर गर्व है। डिवाइन सॉलिटेयर्स के रूप में हम मानकों पर खरे, पारदर्शी कीमतों वाले दुर्लभ हीरे की उच्चतम गुणवत्ता प्रदान करते हैं। डीपी ज्वेलर्स में यह खास 'बाय वन गेट टू डायमंड' एक्ज़ीबिशन अपनी तरह का पहला डायमंड एक्ज़ीबिशन था। डीपी आभूषण लिमिटेड के डायरेक्टर अनिल कटारिया ने कहा कि पिछले कई सालों से हम डिवाइन सॉलिटेयर्स को बेहतरीन सॉलिटेयर ब्रांड के रूप में जानते हैं। कंपनी अपनी पारदर्शिता, मानकीकरण और नैतिक मूल्यों के लिए जानी जाती है। इसके सभी प्रोडक्ट अति सुंदर कारीगरी के साथ उच्चतम गुणवत्ता वाले होते हैं।

टाइड प्लस लॉन्च

उदयपुर। भारत में पीएनजी के अग्रणी फैब्रिक केयर ब्रांडों में से एक, टाइड प्लस ने एक्स्ट्रा पावर वाले नए टाइड प्लस को बाजार में उतारा। इस नए संस्करण का फार्मूलेशन पहले से बेहतर है, जो कपड़ों को शानदार सफाई और ज्यादा सफेदी देता है। अभिनेत्रियों श्रद्धा आर्या, अनीता हस्सनंदनी और सई ताम्हणकर ने एक्स्ट्रा पावर वाले नए टाइड प्लस को लॉन्च करने के लिए देशभर का दौरा किया और इसे बिग बाजार, रिलायंस स्मार्ट एवं स्टार बाजार स्टोर्स के जरिए बाजार में उतारा।

श्रद्धा आर्या ने लुधियाना में, अनीता हस्सनंदनी रेड्डी ने कोलकाता में तथा सई ताम्हणकर ने पुणे में इसे लॉन्च किया और कहा कि हमारे घर में केवल टाइड डिटर्जेंट पर भरोसा किया जाता था। पी एंड जी इंडिया और फैब्रिक केयर की मार्केटिंग डायरेक्टर, सोनाली धवन ने कहा कि यह एक संपूर्ण 360-डिग्री अभियान है, जिसमें टीवी और प्रिंट मध्यमों के साथ-साथ स्टोर के अंदर प्रदर्शन में शामिल है। इस नए उत्पाद के 500 ग्राम पैक का 45 जबकि 1 किग्रा पैक 94 रूपये है।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस सम्पन्न

उदयपुर। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय विज्ञान दिवस-2018 का आयोजन विभाग के अधीन क्षेत्रीय विज्ञान केन्द्र एवं विज्ञान उद्यान, शास्त्रीनगर, जयपुर में किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि ,बिट्स पिलानी के प्रो. सी.बी. गुप्ता द्वारा किया गया। इस दौरान ग्लोबल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी की निदेशक, डॉ. रेणु जोशी, 'मेरापेशेंट' एप के फाउंडर और सीईओ मनीष मेहता व एमएनआईटी के एसोसियेट प्रोफेसर डॉ. बिमन बंधोपाध्याय मुख्य वार्ताकार मौजूद थे। प्रो. सी.बी.गुप्ता ने बताया कि प्रतिदिन के जीवन में हर बात पर गणित के सिद्धान्त प्रतिपादित होते है, यही भौतिकी है। विज्ञान सहित सभी विषयों का बेस गणित है। मनीष मेहता ने विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का महत्व बताते हुये एप पर मौजूद पेनिक बटन के बारे में बताया जिसके जरिए इमरजेंसी के दौरान करीबी और प्रियजनों को चेतावनी भेजी जाती है। प्रो. डॉ. बिमन बंधोपाध्याय ने सी.वी.रमन के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डाला। श्री रमन द्वारा किये गये प्रयासों से विद्यार्थियों को रूबरू कराया। कार्यक्रम में लगभग 500 विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं यथा प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम, चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लिया।

रोटी

पिरथी जद जन्मी ही
तद ही रोती ही
रोटी.....रोटी
अर अबै/ जद इण पै
केई सभ्यतावां पनपगी है
मिनख / घणौ सभ्य
घणौ विकसित व्हैग्यो है
तौ ई पिरथी रोवै है
रोटी.....रोटी।
आखिर इन्सान नै
कितरी चाइजै रोटी ?
दो टैम री /' क दो जूंण री
लागै है रोटी रौ घेरो
पिरथी रै घेरे-ऊं कीं घणौ
व्यापक/ विस्तृत / अणमाप है
रोटी रै घेरे नै लांघणौ
उण सारू उतरौ-ई कठण है
जितरो' क घेर रौ
ओर छोर पकड़णौ
आखिर
चोरी / डाका / हत्यावां जुद
क्यूं व्है है ?
छल / कपट / मिलावट /
अनैतिक आचरण /
अे क्यूं व्है है ?
मनै तो / लागै है' क
भूख बड़ी / अर रोटी
छोटी व्हैती जा री है।

-स्वामी खुशालनाथ 'धीर'

फार्म : 4
(नियम 8 देखिये)

1.	प्रकाशक का स्थान	:	उदयपुर
2.	प्रकाशन की अवधि	:	पाक्षिक
3.	मुद्रक का नाम	:	लोकेश कुमार आचार्य
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस, 311 ए, चित्रकूट नगर भुवाणा, उदयपुर
4.	प्रकाशक का नाम	:	डॉ. तुक्तक भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
5.	सम्पादक का नाम	:	रंजना भानावत
	(क्या भारतीय नागरिक है)	:	हां
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	:	नहीं
	पता	:	352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हो तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों	:	डॉ. तुक्तक भानावत 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर

मैं डॉ. तुक्तक भानावत एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

उदयपुर
दिनांक : 28.2.2018

डॉ. तुक्तक भानावत
प्रकाशक के हस्ताक्षर

शिक्षा पर नये बजट की नजर

-डॉ. शूरवीरसिंह भाणावत-

हाल ही में एक विश्वविद्यालय में चपरासी के पद के लिए साक्षात्कार लेने का मौका मिला। साक्षात्कार के लिए 66 प्रतिशत अंकों के साथ बी.टेक डिग्रीधारक अभ्यर्थी उपस्थित हुआ। मैंने उसे 'अधिष्ठाता' शब्द लिखने को कहा किन्तु शुद्ध रूप से नहीं लिख पाया। यह घटना हमारी सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करती है।

यहाँ दो तथ्य उजागर होते हैं। एक तरफ शिक्षा की गुणवत्ता में साफ गिरावट नजर आती हैं। 16 वर्षों के अध्ययन के पश्चात् भी अभ्यर्थी शुद्ध लिखने में असमर्थ है। दूसरी तरफ बेराजगारी की विकट समस्या से जूझता देश।

परमाणु हथियार से लेस तथा आर्मी फोर्स पृथ्वी के कक्ष में उपग्रह स्थापित करने की क्षमता होने पर भी हम विकसित राष्ट्र की श्रेणी में नहीं हैं। उन्नत राष्ट्र बनाने के लिए शैक्षणिक स्तर की गुणवत्ता के उच्च मापदण्ड स्थापित करने होते हैं। आज वहीं अर्थ व्यवस्था ज्यादा तरक्की कर रही है जो ज्ञान आधारित हैं।

विद्यार्थियों को परीक्षा में नकल करने की अनुमति देने वाली शिक्षा प्राप्त करने के बाद निकलने वाले डॉक्टर, इंजीनियर, सी.ए. आदि राष्ट्र को तबाह करने के लिए काफी हैं। भारतीय शिक्षा व्यवस्था इसी तरह के संक्रमण काल से गुजर रहा है। गैर-सरकारी संगठन 'प्रथम' ने 15 जनवरी 2018 को अपनी सर्वे रिपोर्ट 'असर 2017' जारी की है। यह रिपोर्ट बताती है कि 14 से 18 वर्ष आयु वर्ग के 25 प्रतिशत विद्यार्थी नोटों की सही गणना नहीं कर पाते हैं। इसी आयु वर्ग के 50 प्रतिशत से अधिक बालक सामान्य भाग की गणना (तीन अंकों में एक अंक का भाग) करने में असमर्थ हैं।

वित्त मंत्री अरूण जेटली ने 01 फरवरी को संसद में बजट पेश करते समय 'शिक्षा' शब्द को 29 बार दोहराया। इससे लगा कि वित्त मंत्री शिक्षा के प्रति अत्यन्त संवेदनशील होकर उसकी गुणवत्ता स्थापित करने के लिए कटिबद्ध हैं लेकिन जब आंकड़ों का विश्लेषण किया तो लगा कि सरकार की कथनी एवं करनी में विरोधाभास है। गतवर्ष की तुलना में यह बजट घटकर ही लगा।

भारत के पास विश्व की सर्वाधिक युवाशक्ति है। यदि हम उसे गुणवता पूर्ण शिक्षा देने में विफल रहे तो यही युवाशक्ति देश में अराजकता का कारण बनेगी। भारत में प्रत्येक आश्रित वृद्ध के लिए लगभग 12 कार्यशील व्यक्ति कमाने वाले हैं। शिक्षाविदों का मानना है कि यदि शिक्षा की गुणवता में निरन्तर गिरावट दर्ज होती रही तो वर्ष 2030 तक यह अनुपात 8 रह जाएगा।

भारत सशक्त जनसांख्यिकीय सम्पत्ति होते हुए भी उसके उचित प्रयोग में विफल रहा है। उद्योगों की आवश्यकतानुसार युवाशक्ति में शिक्षा एवं कौशल प्रशिक्षण दोनों विकसित करने होंगे। विद्यार्थियों में सीखने की क्षमता तथा उद्योगों की नौकरी देने की क्षमता को विकसित करने में ध्यान लगाना होगा।

बिल गेट्स की मानें तो अगले 20 वर्षों में भारत कहाँ जाएगा यह इस बात पर निर्भर करेगा कि वह अपनी शिक्षा पद्धति में गुणवत्ता को कैसे बनाये रख सकता है क्योंकि दीर्घकाल में भारत के लिए मानवीय सम्पत्ति ही प्रतिस्पर्धा की मुख्य आधार होगी।

राजनीति में सौहार्द्र और साहित्य में शालीनता के चाहक थे भानुजी

जोग-संजोग से राजनीति में प्रवेश कर भानुकुमार शास्त्री पहले जनसंघ और फिर भाजपा बनी पार्टी में प्रखर नेता बन गये जो अंत तक बने रहे। उनका पंडिताई घराना ज्योतिष के क्षेत्र में दखल लिये था। भानुजी संस्कृत के महापंडित और ज्योतिष के ठेठ-पैठ भविष्यद्रष्टा थे।

24 फरवरी को उनका निधन हुआ। 24 ही फरवरी को उनके पिता भी चल बसे थे। भानुजी ने कट्टर कांग्रेसी नेता मोहनलाल सुखाड़िया की टक्कर मैं चुनाव लड़ा और फिर शिक्षामंत्री रहे डॉ. कालूलाल श्रीमाली के खिलाफ लड़कर तो एक लाख 47 हजार वोटों से विजेता बन गये।

चुनावी सभाओं में एक ही जगह पहले सुखाड़ियाजी को भाषण देने का सौहार्द्र दिया तो सुखाड़ियाजी ने भी अपना भाषण पूरा कर शालीनता के साथ भानुकुमारजी को अपना मंच दिया। केवल झंडा और बैनर बदले बाकी सब यथावत रहा। सुखाड़ियाजी के परिवारजनों की भानुजी ने कुंडलियां बनाई। गत 29 अक्टूबर को अपनी जन्मगांठ मनाते घोषणा की कि यह उनकी आखिरी जन्मगांठ है। यदि जी गये तो फिर दस साल और जीऊंगा।

हमारी मंडली साहित्य की थी। राजनीति में थोड़ा बहुत अचार जैसा स्वाद लिये नंदबाबू थे और डॉ. प्रकाश आतुर मिर्च-मसाला लिये थे। वे सुखाड़ियाजी की सभाओं को अपनी कविता से सजाते, भीड़ इकट्ठी करते-करते एकबार चुनाव में खड़े कर दिये गये। हमने शर्माशर्मी रखते प्रचार में उनका साथ दिया पर उन्हीं की पार्टी के लोगों ने उन्हें पराजित कर दिया।

भानुजी से हमारा मिलना साहित्यिक रहा। वे बड़े ही सरल चित्त के, मिलने-मिलाने में स्नेहिल यारबाजी की मुस्कान लिये मिलते। उनकी वाणी में साहित्य की सरस्वती सौहार्द्र लिये रहती। अस्थल आश्रम के पास उनका रामभरोसे होटल था। वहां भी नंदजी, प्रकाशजी और हम-मित्र एकाधबार चाय की प्याली पर उनसे मिले। हमारे साथ उनकी मधुर हंसी रहती। कभी उनमें राजनीति की कुरकुर नहीं देखी। साहित्य में जब भी मिले, शालीनता के चाहक की हैसियत से ही हमारे साथ घुलेमिले।

पिछले नौ अगस्त 2017 को शिवाजीनगर में आयुर्वेद के यशस्वी डॉ. शोभालाल औदीच्य द्वारा शिविर लगाया गया। दूर-दराज से भी कई तरह के रोगग्रस्त लोगों का वहां संतोषप्रद इलाज देखा। वहीं पास में भानुजी का निवास था। मैंने पहले ही अपने कहानीवाले जंवाईजी को कह रखा था सो जितेन्द्रजी मेहता के साथ भानुजी से मिलने चला गया। वही पुराना, वैसा ही कमरा जिसमें मैं कईबार मिल चुका था। इसबार बड़ी देरी रही। मन में रहा कि राजनीति में साहित्य ओझल हो गया होगा पर हमारी बैठक में साहित्य ही कमलवत रहा। उन्होंने मुझे फटाक से पहचान लिया और कुर्सी के आसन का इशारा देते उर की उर्मियां बिछा दीं। उनसे मिल लगा जैसे मेरा रोम-रोम गेहूं की हरीकच उमियों की तरह रोमांचित हो आया है।

टेबुल के पास-पास खिसकते, आसपास की अतीत भरी, बड़ी देर तक कुशलक्षेमी यादों में हम खोते रहे। राजनीति को रनवास दे, बड़ी देर तक मेवाड़ के साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा कला-चैतन्य के विश्वव्यापी फलक पर अपनी पांखों को फैलाते भानुजी ने मेरे साथ मेरे लिए भी जो टकटक टिप्पण दिये उससे मुझे लगा कि वे साहित्य के चौराहे की हर आहट में अपनी दर्प भरी दखल रखते हैं अन्यथा राजनीति में साहित्य की सुगंध शेर की गंध पा भागते हिरण की तरह ही देखने को मिलती है। उन्होंने मेवाड़ महाराणा अमरसिंह पर लिखे प्राकृत-संस्कृत ग्रंथ अमरसार का हिन्दी अनुवाद ही नहीं किया, उसकी पाठ-त्रुटियों को भी शुद्ध कर मुद्रित कराया।

राजनीति के हर मोड़ को भानुजी ने चट्टान की तरह स्पर्श दिया। विरोधियों को कभी पराया तथा पाछपगा नहीं समझा तो अपने को भी सिद्धांतों और उसूलों पर अंगद के पांव की तरह टिकाये रखा। चालीस माह उन्होंने जेल की सजा काटी।

आपातकाल में 16 जुलाई 1975 को सत्याग्रह कर 20 माह वे ही नहीं, उनके आठ भाई भी जेल में रहे। केलवाड़ा के डाक बंगले में गपबाजी के लिए अपने साथ सुखाड़ियाजी के रात्रि-शयन की व्यवस्था की तो भैरोसिंह शेखावत के साथ जयसमंद की पाल पर रात भी गुजारी। वे कभी पद लोलुप नहीं बने। कांग्रेसवालों ने बहुत कोशिश की कि वे उनके पाले में आ जायें पर उनकी वही दहाड़ रही- 'मैं भारतीय संस्कृति का उपासक तथा पुनर्जन्म का विश्वासी हूं। यदि इस जन्म में नहीं तो फिर अगले जन्म में अपने संकल्प की संपूर्ति करुंगा।'

उन्होंने कभी समझौतों की समझ से हाथ नहीं मिलाया और अपना हाथ जगन्नाथ किये निरापद बने रहे। उनका यश-प्रताप यह रहा कि जो भी राजनेता उदयपुर आता, भानुजी से भेंट का कोई अवसर बनाता। सच तो यह है कि उन्होंने अपने बल-थल से अपनी पहचान बनाई। कभी अपने ऊपर राजनीति का झोळ नहीं चढ़ने दिया।

-म.भा.

काला कानून वापस लेने में पत्रिका का ऐतिहासिक योगदान

प्रसन्नता है कि मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने काले कानून को वापस ले लिया। पत्रिका समूह ने इसे एक सशक्त अभियान 'जब तक काला तब तक ताला' के तहत प्रतिदिन राजस्थान पत्रिका में एक प्रण के रूप में ही सरकारी समाचार छापने का बहिष्कार कर रखा था और उस अभियान में वह टस से मस नहीं होकर अपने कथन पर अड़िग रही। उसी का यह परिणाम रहा कि लोकमत की, जनमत की और अभिव्यक्ति की सर्वथा जीत हुई है।

इससे यह भी स्थापित हुआ कि लोकतंत्र में लोक यानि जनसत्ता राजसत्ता से ऊपर है। चाहे कितनी ही उठापटक हो किंतु सत्ताधीश अन्ततोगत्वा लोक के, जनता के अधीन होते हैं। तंत्र गड़बड़ धूमिल और निस्तेज हो सकता है किंतु लोकबल अथवा जनबल सदैव प्रधान ही रहता है। उसकी आवाज को बलुंदगी से उठाने वाले पत्र ही प्रबल, प्रखर और लोकप्रिय बने रहते हैं। इस अभियान को जिस शीलीनता और अभिव्यक्ति की सहनशील शौर्यता से पत्रिका ने निरन्तर गंभीरतापूर्वक जिलाये रखा, उसके लिए पत्रिका समूह साहित्यकारों, संस्कृतिकर्मियों, मीडियाधर्मियों और कलाप्रचेताओं की ओर से सर्वप्रकारेण बधाई का पात्र है। **- म. भा.**

87 छात्रों को मिले 20 लाख रूपये

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक के प्रधान कार्यालय स्थित ऑडिटोरियम में यशद सुमेधा स्कॉलरशिप चेक वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में जिंक के हेड-प्रोजेक्टस महेश टोडकर, एसोसिएट वाइस प्रसीडेन्ट - एच.आर. संजय शर्मा, सीएसआर हेड श्रीमती नीलिमा खेतान एवं डिप्टी हेड-एच.आर. सुश्री ज्यता रॉय ने 87 विद्यार्थियों को यशद सुमेधा स्कॉलरशिप के 20 लाख रुपये का चेक प्रदान किये।

सुमेधा स्कॉलरशिप की जानकारी देते हुए सचिव रश्मि जैन ने बताया कि सुमेधा संस्था का उद्देश्य आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के प्रतिभाशाली बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान कर उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना है। जिंक की सीआर हेड नीलिमा खेतान ने बताया कि इस योजना के तहत परिवार की वार्षिक आय 2.50 लाख रुपये से कम तथा उच्च शिक्षा में 75 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले छात्रों का चयन किया जाता है। राजस्थान के अजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद एवं उदयपुर जिलों के छात्र-छात्राओं का सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेजों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का चयन किया गया है। जिंक के हेड-कार्पोरेट कम्यूनिकेशन पवन कौशिक ने बताया कि वेदान्ता समूह के चेयरमैन श्री अनिल अग्रवाल की सोच है कि युवा देश का भविष्य है जिन्हें आगे बढ़ने के लिए अवसर प्रदान कराना आवश्यक है। जिंक अपने सामाजिक उत्तरायिदत्व के तहत ऐसे कार्यों के लिए समय-समय पर आर्थिक सहायता प्रदान करता रहा है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।